TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4458

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

सिंहास ॥र्द५॥ अथ सिंहासनबत्रीसी लिख्यते राजावीरविक्रमादित्यरी ईद्रेहीप
१ रकारि सिंहासनरी समुजिके कथा बत्रीससमुआरि लिखित जाथा करिनजी
१ प्रथमज्योतिरूप विबते कुंगेदीसेसाव जेसे कंचनमेरषित मनिसोसोनत
काव २ शास्त्र अनंत अपार जे केरा अरथ अपार अरथ सबे जासु मिले सो प्रजु
त्रिभुवनसार ३ अनादि अनंत अपार जिको ई तासु प्रणाम करै सब लोई पावे
वंछित फल जोई इदइत्यक्रदेषेसकुकोई ४ अथ सिंहासनबत्रीसी कथा प्रथ
मगंनीरश्रीरउदार ज्ञानगुण ईश्वरांसमूह सो नाइमान वरुपराक्रमी श्रीवीरवि
क्रमादित्य तीयेरी कथा प्रवर्ते जे प्रिथीमै ली देवता निर्मित चंद्रकांतरत्नमय सिं
हासन बत्रीस पूतलीयो सहित तीयां पूतलीयां राजा भोज लक्ष्मीनिवास तीयेरा
मुख आगे बत्रीस कथा करि विक्रमादित्य रा गुणकीर्तन कीयो तीये संभलरी इ १
हा करि के ईक महापुरुष कहे छे किसमो सिंहासन किसमो नाति राजा भोज पायो
असको प्रथम पूतली कथा कही सो संभलावो सो कहे छै विक्रंदिसिपुरुषार्थ री प्रवेश

॥ ॐ ॥ थिइसकोमालवदेसछै तेथिअनीतरहित राजनीतिलोकनीतिसहित अने
कपुरुषस्त्रीरत्नकरिविराजमानधारानगरीछै तिहांमहाप्रतापी चौदहविद्यानिधांन ति
हांराजाभोजराज्यकरैछै अनेप्रजानुंपालेछै तीयैसमेउज्जेणीनगररेकनारे धनधान्यक
रिमनोहरएकग्रामछै तेथिब्राह्मणएकवसुदत्तनामि असमर्थत्यंतदुःखपूरावसे तीयैखेतरो॥
आरंभकीधो तेथिअतिहीधान्यनिष्पत्तिहुई तिवारेखेत्रमांहिउंचोथोमदेथिमालोकीयो जा
दरांब्राह्मणमालेचढे ताहरांब्राह्मणरोमनअतिउदारहोइ जेकोईआवेतेहनेखेफलीप्रमुख
खवरावे उत्तरैहेठेतिवारेमूलगावेहोइजाइ एआश्चर्यपांमि राजाभोजनेकहणरेविचारकी
यो इतरेधारानगरीयेतीर्थयात्राकरणवास्तेब्राह्मणआयो उवावातमनमांहेराखि राजाभो
जनुंजाइमिलीयो राजानेकहैमहाराजम्हारेखेतवीचिमालोछै तेऊपरचढतांथकांचित्तउ
दारहोइ जेकोईजिकंमांगेसोदिउं पछैमालासुंउतरीयांपछीजिसमारोतिसमो सांभलोपर
ताचोहोइ असीआश्चर्यकारीवातसांभलीउथिराजाआपरीपासवालमेल्हीयो सोपा 2
सेवानमालेचढीयो तीयैधीमोवारणंदीधे हथीयारदीजानुंदेणलागो कपमाऊतारण

सिंहासन २
दी यात्रे छ
मे कसी
ताहरा कि
दासन हा
लसी तव
राजा पुरुष
लहोइ मुद
ते करयो तु
कीयो ता
द राजा छि
यान +
+ छि +

लागो तांहरा मालीसुं कातरीयो सुंक हण लागो मेकासुं कीयो म्हारो घो मो के छै इत्यादि
आश्चर्य सरीखी बात देखि जाइ राजानुं कहीयो राजा आप असवार होइ बेठे आइ आ
पमाली वहीयो सुं आति ही उदार कवी अरिक हीयो संसार रो उपदरिद्र करुं एतो कहि
द सलाव दान करिजतरीयो अरु विचारीयो न्हम रो गुण छै के नाव स्तरो गुण छै कहीयो छै
इहो ते न विस्तार न्हु जन मिल्यो मनकाने पनी वात पात्रे दीनो विस्तरे पमितमुखश्लोकात
१ तेसे वस्तस्वभावते आवुही करै प्रकारा प्रछन्नराखी नांखै जिहितिहि होइ प्रकारा २ हि
वैवार्ता तवे राजा ब्राह्मणनुं वक्त तद्व्य संतोषि वेत्रमोल लीयो अरु वेल दारवी लाइ मा
ली देव थी पोदायो ताहरां वलतां उवाघी वंद्रकांता मणिमय सिंहासण वही सम्ह तलीयो
करि सहित नी कालियो सो वसी सहायल्लावो अरु आव हाथ विजलो अरु ऊंची विलावे
नथी [illegible] सिनही तांहरां मूंज तेकहीयो महाराज नजाणीयो जायेछे सोइ सो सिंहासणि कि
ण रीति देवनिर्मत हीसै छे अरु महाराज भावछे इयेनंवलदीजे ईयेरो अधिष्ठातादेवता
छे इमि वंगतिक पुरुष लिंहान तो सोम्हिं उठाय लहे हालीयो सिंहासण धारानगरीमांहे आणि २

सह अरहमालाकरिनीतरि आणीयो जवे सिंहासननुं नवीन सालाकराई तेथि सिंहासणराखीयो
तठा पछे भलो मुहूर्त देखि साहणी रो धरीयाणी अणायो अवोलर सोजवखीमंगाई दही वजाल
चंदन गोरोचन सरसव रावाला इत्यादिक मंगलीक वस्त मंगाई नालेरवी जोरासदा फल अ
मृतफल इत्यादिक अनेक फल मंगाया घकवा मरवत्र इत्यादिक सर्व राजचिन्ह अणाया
सौभाग्यवती मंगलकारणी स्त्रीयां रोवृंद आइ आसमता इयेप्रकारे राजानुं अभिषेक कराइ
व्याघ्रचर्म ऊपरि सप्तद्वीपावती पृथ्वी लिखि आगे प्रधान मुहतां उमराव सावंत वासे आपणे
परिवार सहित राजा सुभलगने सुभमुहूर्ते सिंहासण ऊपरि वैसणनुं त्यार हुवो तितरै दे वीर
प्रभाव हुती प्रथम पूतली मनुष्यवाणि करि बोली अहो राजा ईये सिंहासण ऊपरि ईये सिंहा
सणरा धणी सरिखो उदार चित्त हो इतो ईयश्च सिंहासणे पग धारे और सामान्य रेयोग्य न छै ए वेसु
न तमात्र राजा मुंहता सहित बोलीयो कउ वित मात्र ही लचादेक तो कहि पुत्री वीजो पिण मो सा
रिखो उदार चित्त कोई छै वलि पूतली बोली इसमो उदार रीवात आपणे मुख कहो मो सारीखो
कुण उदार चित्त हुवो तो उवेनं द नी ककाउरि सको ई जण हसी जो आपणी वडाई आपणै 3

सिंहासण मुखकहै इहा अथलेगुण अथमुखकहत जहांतवोदलकोहोइ जौआपणहूतक
३ वआपने जुवतीसुरकनकोइ १ औरकुगुनवर्णनकरै तोहिवमाईथाइ ज्युंऔरिकावग
हतिही हीयमेदरयनमांइ २ वार्ता इसावचनपूतलीरासां नलिकरिविक्रायवदनको
रराजाबोलीयो हेकल्याणि किणरोए सिंहासनतिथैरी किसीउदारता ताहरां पूतलीबोली
राजासांनलिप्रथमईयेसिंहासणिनउत्पत्ति श्रीभागवतपुराणे पंचमस्कंधे प्रगटभाव
वेजीयेरोइसमो श्रीआदिदेवपुत्र अवंतिकुमार तीयेआअवंतीनांमनगरीरची सोधणादि
नाहि जीयेरेविषे धर्मअर्थकाममोक्षमिलैहै अरुपुसपार्थत्रयमयीप्रजावसैहै लोकगन
रहै वेदमार्गचलैहै उत्तमजातिहै दानगुणसहितहै हाथीसरिषापुष्टहै अरुदासदासीवि
चैअक्षोभहै कलावांनहै पंमितअविरोधीहै परस्त्रीविरक्तहै उद्भूपदरावांवकहै वकुमी
लावसूपरक्षांनहै जीयांरैमुक्ताहलरलसुवर्णकरिसीभाग्यमांनहै पुरुषस्त्रीनलैराजक
रिनिर्जयनिःसंकथकारहैहै चोरचुगलरोभयनहै कुमकपटरहित जेथिगुनहगारकोइ ३
जेथिमाथैदंडकरैराजा दंडएहवोनांमदेहराजपरिदीसैहै जेथबंधवेलीरावुराकेसानुंहे

वीजोबंधनकोईनैनही जेथिवादतर्कशास्त्ररौहै पिणबीजोवादकेथिनहीहै जेथिहरुमुष्टि
धनुषरैविषेहै पिणदांनदेवरैविषेहठिमुष्टिकदर्यनहीहै एहवीनगरीअवंती तीयेनगरीरै
वषेनर्मदहरनामराजाराज्यकरै पहिलीपिणजेथिअनेकराजाहूया तीयेकारणिआप्रथ्वी
रत्नगर्भीकहीजैहै जीयेराजारासभारावैसणवालामनुष्यएहवाहै दरिद्रीडुषीदीनकरण
रीताईजीयांरैदयाहै अरुधनरोमदजीयांरैआवेनहै अरुपरोपगारकरणरीताईसचीतहै
अरुजिकोमांगीअकोहूर्बनुंपांमैहै अरुयोवनराउदयरैविषेजिकेस्थिरचित्तहै अरुमहा
व्याधरीविसारैविषेजिकेधीर्यवंतहै तिकेधरतीराधूनहै तीयारैमाथैधरतीरोभारहै बीजाध
रतीनैभारनुतहै इसमापुरुषरूपीयारत्नहै जीयेराजारीसभामांहैहै तीयेरैराजारोजक
नौभाईविक्रमादीतनाम सोराजानिवेकसमर्थथै कुंएकअपमानपायो सोभीसरिगयो
वांसेतीयेराजारैअनंगमंजरीपटरांणीहुई सोराजारैप्राणवल्लभहुई तीयेराजारैनगरमां
एकब्राह्मण अतहिदरिद्रीमतथको भुवनेश्वरीसेवाकरतोथको तीयेऊपरिदेवीसंतुष्टहु 4
ई अरुकहीयोवरमांग ब्रामणे सोहूं ताहरांब्राह्मणविचारीयो जे अजर अमरपणोमांगु

तिमांगीयो ताहरां देवी एक फल दीयो अरु कह्यौ ईये फल षायां अजर अमर पणो होइस ता
हरां ब्राह्मण लि सिखदाइ फल लीयो अरु घर आइ सनान करि मध्यान्ह समे एकांत बेसि षाणनुं
कह्यो एतै विचारीयो यांचक अरु दरिद्री तीयेरे अजर अमर किसुं करणो सिद्ध तो इस मो फल
राजानुं दीजै तो भलो अरु राजा दरिद्र पणो गमावै इसो विचार करि फल लेआय राजानुं दीयो
राजा ब्राह्मण नो दरिद्र तो मेट्यो अरु मन मांहि विचारीयो जुं अजर अमर होइस अनै राणी वृ
दी होइ जासी तो विषवाद हुसी तीयै कारणि मया करि फल अनंगमंजरीनुं दीयो अनंगमंज
रीरे वहिलवान सुं प्रीति हुंती सो फल लेजावैनुं दीयो अरु फल रा गुण कहीया तेवहिलवानवे
श्या सुं रातो हुंतो तीयै मया करि वेश्यानुं दीयो वेश्यायै विचारीयो जुं नीच कर्म री करणहार वेश्या
घणा दिन जीवसी तो अखूटो चवनघणा दिन रहिसी तो घणा पाप कर्म करीस तीयै कारणि राजा
नुं दीजै तो भलाई वे ईये फल जाय कर राजा वे इसो विचारि फल लेजाइ राजानु दीयो राजायै फल
ओलषीयो अरु विचारीयो रांणीनुं फल दीयो हुंतो ते रांणी भली नही पिण इण वात री षबर लेणो
न जोनही ताहरां पिंगलारांणी कोपी अरु अनंगमंजरी सुं मन ऊतरीयो फिटकार दीयो अरु

काव्य कह्यो यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता ० ईयै काव्य रि सहा हियमे आंणि सु लव्यणी जोईये
रसो मन्ने साफिरि रसी श्रीरसुं आरति वैश्या रन्न १ वैश्या रसी राज सुं द्रिव्य दीये तो देषि भिगवैश्या
राणी रमण भिगनकां मवि शेषि २ मो देह मद आणै वकाणै निंदा करै राति रतिमाणे रावैह से नरैम
रावे किसुं वेडि त्रिये विणना वे ३ जांणे लषयो जनथकी नवग्रह केरी वात पिण त्रिया चरित्र नजां
णही सवि रघबतात ४ बार्ता अग आगे राजा नर्नहरी अनै पिंगलारांणी राज्य करतां एक सम
य राजा सिकार गयो हुंतो अरु जंगलमांहे एक स्त्री पुरुषनुं दाग दे तीदीवी अरु आंपणो मास
का दिन पुरुष री विरह मांहि होमती देषि राजा स्त्रीयो तंकण असकिं सु करेंछे उवे कहीयो मे
ब्राह्मण जाति वा मो तुम्हारो भरतार पीहर लेजातो हुंतो वीजो चिव मांहे भरतार रो मरण हुयै
वीहोको माणस नही जो सती करै अरु ईयेनुं दाग नही हुंतो अरु अग्नि मांहे ब्राह्मक
संतो जीवती सरिजाइ अरु अधवलीया ही रहां तीये कारणि ईयेनुं दागि दै आधे
अंग आपणो ही चालि दावै अग्नि मांहे देईस राजा इसी वात सांभलि घरे आइ पिं
गला राणी आगे वात कही तिवारै रांणी कह्यो इछ सतन दो हव छे राजा कह्यो सत किसुं

कहीजे राणी कहीयो सत कहावे जो नर्क्षार रै मोत देषि अथवा सा नलि उरत धारण बो
ने सो सती नर्क्षारि पा छे ४ घमी जीवे तो नर्क्षारि रा साथ सु घणी हेती पछै ताहरां सत का
हण रो इसमी वात सा नलि मन मां राषी अरु मनु मांड कहीयो इयै री परीक्षा कुं लेइ
स राणी विचारी यो नर्क्षारि री मोत वीजी छै मरु इती षवर मोनी पछै ताहरां नर्क्षार सुं वेत
घणी पछै इसो विचार गुरु सो वीनती कीधी म्हारै इसमी वस्ता हो इजी ये करि नर्क्षार राष्ट
तुरी तत काल षवर पछै तो पतिवृतव ले ताहरां गुरु प्रसन्न होइ एक फल दीयो अरु
कह्यो ओ फल सु के ताहरां जा णिडे नर्क्षार री मृत्यु कुई आ बोर दे तां जाणि जो जीवे छे हि
वे के ताएक दिन पछी राजा नाहर री सिकार गयो रहतो अरु कोस दस सेती या घमी आणि रा
ली नंदी क्री राजा अरु नाहर मास लो झ्यो नाहर नु राजा मारीयो राजा नु नाहर मारीयो
वि कि मृत्या राणी सुणि करि मां हिजाइ देषे तो फल आ बो छे ताहरां राणी जाणीयो राजा तो
जीवे छे पिण विना मू आ स्नेह न रहे इसो आसा न देइ मर णो पिण मूंयां किम रहे एअ मरसो ५
अवसर जो न मरि जे तो लज्जि जै सा म सुंदरो १ वार्त्ता मो नु मर णो ही मर णे इसो जाणि पिंग

लाराणी मूंई पछै राजा मांण स मेल्हि पछतां णे जे नली स्त्री कुंती जे राणी न मरंत तो स्नेह न रह
त मरै तो घरि जाइ मे विण विवा स्यां माणस मेल्ही यो इसो विचार करतो राजा पहि जी विर क्त
हुवो पछै राजा घरि आइ कि सु देषे पिंगला न ही ताहरां पाट बो मि रांणी रि मसाण जाइ बैठो पिं
गला २ करै इसमै समइये राजा रि पासि मांणसे आवतां गोरष नाथनु षबरी दीयो गोरषनाथ
री कही ताजि पमी गोरषनाथ नबी २ करतो ज्रेहे ही डाबे वो कितेएक काल राजा गोरष
नाथनु कहीयो तो नुं बीजी मबी घणी ही दिरां मुंहु उं रुवि लेजाद जोगी कह्यो तो नुं स्त्री
ही घणी दिषां मुंहु उं जा लेसु ले अरु उं जां ले पिंगला राणी मिले सो तो पिंगला मुं आही
न मिले तो जिको जीवतां मिले सो मूआं न मिले तीयां सुं इस मे रागन्ना वन धरी जे इस मी
मां ति राजा नु घणा उपदे श्रा दे गोरषनाथ ले गयो अर राजा पर धां न नु कहि गयो के थे ही
ही विक्रमादित्य मिले तो उवे नु राज्य दे ज्यो पाछे राजा रे पाटि व्यार प्रधान पाट रै कनारै बेसि
काम करे पाट षाली रहे ताहरां पाट सूनो देषि अग्नि देवता पाट री अधिष्टाता हुयो पर
धाने दी वी राजा रा जु काम विना काम न्हा लेन ही ताहरां परदेसी डाह्मण सो पाट वैसाणीयो

सिंहासन ६ ति

सोयांचूपकरराजकीयो पाछै आधी रात्रि अग्निवेताल आय ब्राह्मणनुं मारीयो ताहरां
परधांने बीजो वेसारीयो उवेनुं पणि मारीयो तीजेनुं वेसारीयो तीजानुं पणि मारीयो इत
रै थि विक्रमादित्य जंतो देसांतर लीयो राजा भर्तृहरि जोग लीयो रहती रांणीयां सरि
गई अरु बीजा राजा उजेणी नै करै है ताहरां विक्रमादित्य बांनो आयो कोई उजेणी नहीं
परधाननुं पूछीयो जे कुं राज सूनो रहे है उवे कहीयो जीये नुं नाम धरी राजा करां तीयेनुं
देवता मारि जाइ तीयेरे मर करतवत को इबे सेनहीं बीजा राजा न थिर करतो जाइ वेतानुं त
पतव सालेन नहीं अरु म्हे पिण विक्रम री वाट जोवां छां जो विक्रम आवै अरु पाटी को
वै वैसे जाई रो राज्य ही को है अस राजा री आज्ञा है ताहरां विक्रम बोलीयो आज मोनै वे
साणजो मुं है ते कहीयो वैसो ताहरां थिर लग्न मांहे पाट वैठो बलवाकुंल अनेक जात
रा भजी बानि जीविक राइ राष्या संध्या समय अनेक दीप करि आप पुष्प फल केरी जागत्
पा ९२ कथ को वैठो देषे छै तिसे पहर १ रात्रि गयां काल विकराल रूप वेताल आयो देषे
तो वांमिर बलि आगै पगमुंक वाने वामन ही देवै तो राजा नै मो आवै तब राजा पलंग ६

सुंकहि हाथि जोम बोलीयो जो मैं तयार बूथ मणि पहिली बल नें मोजन करो ताहरां नाना पु
कारनी वस्तु संघ्रत जीमो पुस्याल हुवो कह णलागो मे तोनुं उजेणी रो राज दीयो पिण मो
नुं इसतरी बलि नित्य दीजे इम कहि आगी यो वेताल गयो प्रभाते प्रधाने राजा नै जीवतो देषि
पुस्याल हुआ जांणीयो जे कोइ कि अधिक सत्वनो धणी छै तिवारपछी राजा नित्य बल दीजे
वेताल नित्य आवै एक दिन आगीया नुं पूछीयो आगीया वेताल थारी कितरीक शक्ति छै
आगीये वेताल कहीयो अनेक शक्ति छै जावे ति हां स्वर्ग पाताल जाउं अरु सर्वज्ञा णुं हु वि
क्रम पूछीयो तो कहि म्हारी आयुर्बल कितरी छै तिवारे देवता ये कह्यो एक सो बरसरी छै त
व विक्रम बोलीयो तो कुंपुही सत्य पमीयो ते वास ले केतो एको भर सो बरस करि तेम ही तो नाले
निनाणुं बरस करि ताहरां देवता बोलीयो ताहरो आयुर्दाय हिवै तो घटै न बधै तिवारे मन मां
विचारीयो तोइ ल सुं मरको नहीं देवता आय पलै ठिकाणै गयो प्रभाते प्रधानां नै तेनि कह्यो
जं विक्रमादित्य बीजो कोई मत जांणो इम कहि सर्व सहिनाण वताया अरकह्यो देवता
रैन्यवांनो रहीयो जंतो हिवै मोनुं मरनागो आज पछी बलिमत करो अरु व्यापार सुरू ष

सिंहास० ७

म्हारी म्हारै आगै रहो ताहरां अंनेकेरी राज्य री अनिबेक करि व्यारसु सपवम्हथ
रीचौकीदार राष्या जे छि आधीरा तिगई तितरै आगीयो वेताल आयो देषितौ बलन ही
ताहरां री सायकरि कह्यो क्युं रे आऊ बलनकी थी राजा बोल्यो किसुं नित्य बलकारु
थारै की थे म्हारी आसुर्वलंत बो अधिको न हुआ तो वेताल कहे मोसुं युध करि इतरो
कहि राजा पंच सुभट सुवाहिर आइ ऊभो रह्यो ताहरां आगीयो वेताल राजा रो सत्व देषि
संतुष्ट हो इ बोलीयो मागि रहो सत्वाधिक तुं छै ताहरां राजा कह्यो तुं छै तो मोसुं मित्रा
ईकरि ऊं समरूं तिहां आइ माहरो कार्य करो वेताल कह्यो तथास्तु इतरो वेताल कही
आपणी ठोमगयो राजा सुष सुं राज्य करतो हुओ केताएक वरस राज्य करतां हुआ
एक समे एक जोगी आयनै आंबा रा फल कीया इतरै इक वानर री राजा रा मुह आगे वेचे
हतो ते आंबा रो फल षावण लागो मांहे थी रत्ननीसरियो राजा लोके दीठो ताहरां राजाए
पूछीयो थारै जोगी किसुं कार्य छै जोगी कहे एकांत कहिस्युं राजा एकांत आइ बैठो तब जो
गी कह्यो ऊं गोदावरी नदी रै तीरै मंत्रिसाधिसु तेथि दोइ कोसाऊ परिम्रुतक छै सो आण दे ७

ज्यो मंत्रसाधु राजा कह्यो आणदेसुं महाराजा वीजा री कार्य न छै जोगी कह्यो थे वडी सलक्ष
णा छो तीथे कारणि कऊं छुं जोगीये जाण्यो कदाचि कोई वरजे तो ताहरां कह्यो महाराजा वि
लंब री कांम न छै इहां मानव मछि ऊपर घणा स्वारथ जाणि अनेक प्रपंच गारडु आदरे
सो जाणा पाई ये एक १ गाथा लच्छी सहाव चवला वछविव लंवजी विअंहो इन्नाउ तउवि
वलो उवयार विलंवणाकीस २ दसदस नी श्राता कम व श्रो षधरी ज थि वीह चलैये नचले
सपुरिस वचन सर्वथा दीह ३ वाली राजा कहे जोगी जो माहरी धन अनेरा री रएस दता
हरै आगे छे जिहां कहे तिहां त्यार छुं जोगी कह्यो महाराज क्रिया सिद्धि तो पराक्रम छै उप
गरणे नहीं छै साहस्ये सिद्ध छै ते थि कह्यो छे इहां लंका सोगढ लेवणे असुतसणे उद धि अ
थाह वेरी रावण मंनली जन करण जो राह १ रण सहाइवान राते करि कोदंन साहि सकल
निसाचर मारीया तो सिद्धि पराक्रम वाहि २ अस कहीयो ऊं मंत्र साधकुं छु महाराज म्हारै हुं
उत्तर साधक हुइ सो कहि राजा नुं तेथि लेगयो अरु आप जाप करणनुं वैठो राजानुं कहि
को सदोइ ऊपरि म्रुतक छै सी समरी मा लऊ परितीये ले एनुं मो कन्यो तेथि राजानुं कहजो 8

णी पंचवीसक थाराजानुबेलालकहीरात्रिमाहि पाछली रात्रिवेलाजराजानिप्रत्यक्ष होइनै
कहे अहो राजा श्री योगी छलसी तो नु पुरुषो हमकां णि अग्निकुंडमाहिनाषि सोनारो पुरसो
करणमतेछे ईयेरो विश्वास मतकरे राजाकहीयो समे जोग होसी सो करसुं वलेवेलालक
हे जोगी पिणउत्तम पुरुष छै ईयेरो पिण पोरसो जसी इतरो कहि वेलाजय पणि आवणी होम
गयो पाछे रातिमा लेजाय जोगीने दीठउ जोगीकह्यो राजा अग्निकुंडमे नी आय प्रक्षेक द्यो ता
हरां राजा ये कह्यो स्वामी पहिला थे प्रक्षेक दे दिषावो तीये नांतिकुंड भी कहुं ताहरां जोगी प्रक्षेक
देतो उठाय अग्निकुंडमांहे नाष्यो सोनारो पुरसो जवो पछे सूर्यरे उदे वेतालीरिशिरदे राजा आ
पणी नगरी पोरसो ले आयो सो पुरसो धरती मांहि गाडीयां आदो सूरणनी परेव छे पुरसो सो
नारो अस राजा राज्य करतां एक दिन विक्रमादित्य राजा चोगांन खेलण कुं नगरी बाहिर आ
या जंता तिहां विद्याधरगछे श्री पाद लिप्त सूरि संताने श्री स्कंदिलाचार्यशिष्य श्री वृद्धवादी सूरि
र तच्छिष्य श्री सिद्धसेन दिवाकर बत्रीस राजकुली नो गुरु सर्वज्ञपुत्र एहवो प्रसिद्ध विहार क ८
रतां अवंतीरे बाहिर आवतां राजा ये दीठा सर्वज्ञपुत्र नाम सांभलि तीयेरी परीक्षा लेणनुं राजा

मन मांहि नमस्कार कीधो ताहरां आचार्य आसीर्वाद दीधो उवां मन मांहे नमस्कार कीयो उवां अग
टपणे आसीर्वाद दीयो राजा कह्यो स्वामी नमस्कार कीयां विना आसीर्वाद क्युं दीयो ताहरा स्वामी क
ह्यो उहां मन मांहे नमस्कार कीयो तब मे आसीर्वाद दीयो ताहरा राजा संतुष्ट होइ राजा कोटि प्रसाद
दीयो इणे निस्पृहपणे न लीयो तिवारे राजा ये उणधनरो जीर्णोद्धार देहरो कराये राजा वहुत षुसी हु
वो अस वही मे लिखीयो अहो नमस्कार आसीस की जाणे कागत विडोषि कोडि दीन सिद्धसेनकुं सो वि
विहि लिखीयो ते विद्धि १ वलेराजा चोगांन रमतां एकदा वले सिद्धसेन दिवाकर मिल्या राजा ने प्रतिबोधवाने
च्यार श्लोके स्तुति कीधी राजा स्तुति निसांभलेने ऊपरा ठीहो इऊभो रह्यो तिवारे सर्व सांम्हा होइ श्लोक क
ह्यो इहां जाणे सिखाई धनुर्वेद की विद्या अद्भुत राजा बाण चलेसो पाइमा गुण काबिदि निपाक १ चौथो मे
नीसाण को घट फूटिवे रयाण अवक्रिन एह वो कांण अरिनारी अंधीयार जरण २ आगे आइ इहोक ह्यो
फिरि राजा ऊपरा वो ऊठ्यो ताहरां जोइ इहो कह्यो मुखवसी सरस्वती आय लक्ष्मी उइहां आइ घन
लक्ष्मी कि मरी साय महाराजा गई दिस विदिसि इ आगे इहोक ह्यो फिरि राजा उपरा वो उठ्यो ताहर
वी थो इहीक ह्यो इहो व्यापरव प्यगार की मारद रिद्र सिर देकु सुरी प्रणति राजा सली मुंक णो पिण

सिंहासन जसलेऊ ४ वारता इतरैएव्यारइहासुणि राजानमस्कारकरिकह्यो स्वांमीश्ररथराज्यल्यो महीत
ए रमुंहमांग्यापमगनाव्यारल्यो श्रथवामनोवांछितमांगो सिद्धसेनश्राचार्यकह्यो श्रमेनिस्पहांने
कंचुहीनवाहीजे थिएएकतुंधर्मकरि धर्ममार्गप्रवर्त्ताव इमराजा राज्यकरताएकवले सिद्धाश्र
ममहाप्रं मितेस्तवनाकीधी तेहनेकह्यो स्वांमीमनोवांछितल्यो स्वांमीबोल्योम्हारेवाहिवे महं
कालरैप्रासेहरसिद्धिरी देहरीकराव राजाकहीयो तथास्तुं कहि सिद्धाश्रमसिन्यासीनुं घरलेई
जाइ सिंहासणएबेसाणीयो सिद्धाश्रमकहीयो इहां दो ईससाथनवानीहरिसिधी सिद्धाश्र
मेश्ररांधी विजयदियंउ समाने संग्रामे विक्रमश्रीर १ महंकालश्रेयसिकरो सदाउम्हा
रो राज्जिहिवंदचितुवल्लकी होइसिद्धिसिद्धिकाज २ वार्त्ता इतरेएकयांचमीयमित्तश्राइ
राजासुंमिलीयो राजानुं काव्यसुणाया वीजैदिनराजाश्रचाश्रमनुंतेमि महंकालरेदेहरे
लेगयोनेपछिकह्यो श्रीमहंकालरीस्तुतिकरो तिहांश्रचाश्रमसवैयौकह्यो सवैया पावैसु
पसंपदानदेवैनेनश्रापदासदानिरोगतनमनसंतोषश्रथानहे सुजसविकासी श्रविना
सीकालश्ररूपतेकिंकरत्रतिनलोकश्ररवषांनहे श्रतियारपदश्रावलेतसुरलोकथ्या वेवैनसा ए

मान्यमनुष्यजलस्रजादीतेजानेहे महंकालमयाकरैविक्रमकुं थिरकरैश्रवंतीकौराजसुनो
हरेपुएयमानेहे १ इमस्तुतिकरी तलेकह्योमातारीस्तुतिकरो सिद्धाश्रमसांम्होदीठो फेरिसि
द्धाश्रमस्तुतिकरैछे जगतिसहायकरैउसहदारिद्रहरैपरिरषयारैकरैराजमनचायेहे इस
श्री मनइरिकरैउगमसुगमकरैउगमसुगमकरैउरतिनिहरै श्रेसेश्रागमनिगमएहे श्रसुरश्रसाध
थलसाधनश्रनांनलाधनसुतावेहरिसिद्धीनांमयाएहे उमयाश्रंबिकाश्राईईश्वरीश्रानंद
माईइयेनांमलाएतेकृतारथहोइश्राएहे वार्त्ता इसीस्तुतिसुणिराजा सिद्धाश्रमएपिप्रसंस
करतोघरेश्राया एकदिनराजासनामांहिपंडितसकवीश्वरगणीश्रासहितवैठोछे तखिमुणीजन
कहैछे जोलक्ष्मीश्रापवयाथी तोदीकरीसमकहीऊं वापरीउपार्जलक्ष्मी तेतोवहिनसमान श्र
नेश्रन्यनीतेतोपरस्त्रीसमकहीये तेवास्तेलक्ष्मीरोत्यागदानफलसोइनलोछे एहवातसुणि
राजामनमांहिचमत्कारपांमिमनमाहेविचारीयो एलक्ष्मीत्यागभोगनली तोम्हारेहाथछा
मारजहुतव्यारेवरण नटविटगणकवैद्यइत्यादिक श्रोरश्रनेकासुषछे श्रसमेंहतहलादि
कभोगवांबा श्रोरविचवछे सोतीयकरिप्रछीश्रनुएकार्स्य जोकारंभरिएतोसुं श्ररुसंवहे

सिंहासन सारा लोकारो रूणोद्धार करि पृथ्वीरि एरद्धि ताकीधी अरु सर्व लोकनि वल वार्त्ता होइ रितथा
१० थकां राजाविक्रम अंत १ परोपकार करंतमा जे होस्ये तेहोइ चिंतामणि ग्रह कालमानी पिल
सत्ननंबमे तोइ २ वारता इथिप्रकारे धर्म करतां वरसावरस पृथ्वी अनृण करइ इथिसम
येदेवता स्वर्ग मांहे सुखसे गर्व करता देखि सिंहासनलि बेठो राजा इंद्र देखिबोलीयो थे घणुं
मायाराविक्रम मांहे बो पिण थाहरे देणरो सुखनहीं वापी कूप तलाव प्रसाद उद्धरण रो हर्ष
नहीं विवाहसुत्रो त्सव रो हर्ष नहीं अरु घेमादाथी नाना प्रकार असवारीरो सुखनहीं यतः तां
बूलमन्नं युवती कटाक्षा गवांर सौवा जक वौधृतानि इक्षुविकारा मतयक वीनां स सप्त
का रान संवति स्वर्गे १ ए सुखमहीं तोथ काँसुं गर्व करो छ मनुष्य लोक रे विषे राजा वीर विक्रमा ति
दित्य छे सोपरउपगार राव दंभांति २ रादान करै छै इसी वाँछा नराउत्तारा जांस्य स्तुति
करि संतुष्ट होइ आपणो सिंहासन राजा वीर विक्रमादित्य नुं मेल्हदीयो तेवंदकांति रत्न
मयवल्लीसहत लीयां इंद्ररे दीयो सिंहासण राजा वीर विक्रमादित्य सुसु कृते स्रे राज्या भिषे १०
क करि बेठो छे तीयेरी सभा मांहे सिद्धसेन दिवाकरादि कतार्किक बेठा छे ज्योतिषी बेठा

छे केई वेदांतक बेठा छे केई सिद्धांती बेठा छे केई स्मार्त्त केई पौराणिक केई साहित्य पाठी केई छं
द अलंकार पाठी केई वैद्यक बेठा छे केई मंत्रवादी यंत्रवादी धातुवादी केई संगीतना जांण इणे
प्रकारे सभा मांहे अनेक पंडित रीजारी स्तुति करै छै इहां इरे अलद्धि प्रताप रो नीलकिरणे सभी दि
श्व रिझाए विक्रमराय उजेणी अलगे सूरो समी पिक्रासित छ्त्रो १ अन्नो सिरुऊ णहारो सिरसेडि
ण विक्रमादित्य सूरो सो राजा परोपगारी मालवदेश महादानी २ पुनः पूर्वजन्म शुभकर्म कीय
ए फलति णराको इगढ उजेणी मालवो अरु दातागुण होइ ३ पुनः होम जाप करि देवता नवंत
रिकीया प्रसन्न तोपाई विद्या विक्रम राजा दिय णकं मन्न ४ वेदांती सुणीयो रांमचरित्र मांहि एकम्बि
तऊ इन्ना गोत तो ऊबोउजेणी धुणी विलउदाए देसोत ५ इति पौराणिका: देव पूजा यात्रा करी
अरु कुल गुरु देवांरी सेव तो उजेणी पति कीयो विक्रम प्रत्यक्ष देव ६ इति संहितायां वर्मो वि
क्रमादित्य राजा वर्णयो जीये सोवन मे पृथ्वी सोग्रेह आण्यो जीये साधवे सालअरु इष्टकीयो
सारा ही जैनेत णी वड्डही यो वर्मो को मदांनी विक्रम विख्याता इसो को॰॰ नहीं सीक लै इष्ट दाता
जीयेरी प्रसंसा करी इंद्र राजा वली मेल्ही यो सिंघासण सुजस काजा ७ इति छंद पाठी कवीश्व

र तीनउच्चसुग्रहतणे मित्रग्रहीग्रहतीन रोहिणनक्षत्र विदिनऊनम तौ अवरिककेहोकीन ८ इ
तिज्योतिष शास्त्रजातनऊनम्योऊतन बध तेऊ तनकीयांह तेचिरजीव - ग्यांनीगुणी इसमोके
थबीयांह ९ इतिवेदक भेद सवेसंगीतरा रागछत्तीसेजाण विक्रमरा जासारिखे ऊणराजा
गुणजांण १० इतिसंगीती दांनतपस्यासरगुण ज्ञानविवेकविनोण अवरिज इणवातेकि सो
बऊ रतनमहिकाण ११ इसी भांतिराजाराज्यकरतां एकसोवरसपराऊवाराजाथिणजांण्यो तारा
राप्रस्थांनपुरस्यालणरो मनकीयो तीयेसमेसालिवाहनराजायेसांभल्यो जौविक्रमादित्य प्रस्थ
नपुरस्यालसी राजासालिवाहननुं विक्रमादित्ये७वारबांधीयोहतो तिको सालिवाहनमार्गमांहे
साम्होआवी महासंग्राम कीयो तीयेसंग्राममांहे विक्रमादित्य साम्हे पगेकाम आयो वेतालपिण
समरीयापुत्यऊनऊवो तेथिकहीयोछे दीहामे कारिजसरे निफलनजाइ उपच्या दिन
ऊपरांतैहो इऊर्व केथिनलगे दाव १ वार्त्ता तथिसोनारीपुरसोऊ तो सोऊ मिगयो राजा
रेपुत्रकोनहीं पटरांणी नंगर्भऊंतो ताहरांसर्वप्रधानेकह्योरांणीजीथेरहो औरसर्वमहास   ११
तीऊवो ताहरांपटरांणीयेसतमासीयोपुत्रपेटफाडिकाढमुंहतानुंदीयो असुपटरांणीमहा

सतीहुईतीयेपुत्ररोनांमविक्रमसेनथापीयो असराज्याभिषेककरायो पिणकदेसिंहास
णकोईनवेसे ताहरांएकदिन आकासवांणीहुई जोइयेसिंहासणजोगबीजोकोनहीं सिं
घासणधरतीमांहिसुणगामी ताहरांमुंहतेसिंघासणखणखणाइ धरतीमांहेगाड्यो तीयेनुं घ
णोकालव्यतीतऊवो घणाराजाहोइगया पलिभद्रा रावमाननागऊ थांहरेघरिसिंहासण
आयो असराजारोवैठोसोईनवेठो तोबीजेरीकणावजावे इयेसिंहासणराजा वीरवि
क्रमादीतसारीखोमहाउदारहोइसोवेसे सामान्यपुरसबवेसणनपावे इतरीवातसुणिर
जा भोजबोलीयो विक्रमादित्य किसोक उदारऊतो तेथिप्रथमपूतलीकथाकहैछे राजा
भोजसांभलेछे प्रथमहीविक्रमादित्यरो सतरोउदारपणोकहैछे एकसमेउजेणीनगर
ये विक्रमादित्यराज्यकरतां इयेसिंहासणिबेठाछे तीयेसमेएकमनुष्यदीनदयामणोआइ
कनेरह्यो मुखेकरीबोलेकं नहीं मांगे पिणनहीं ताहरांराजाविचारीयो औपंडितछे इहादे
वकहेतेदेवने जाहिपदारथपावलक्षासाहस आनमति ज्ञानपांचमोसाच १ वार्त्ता इसो
विचारकरिनमांगछे ताहरांराजायेसहस्रदीनारदिराया तीघणिनजाये ताहरांराजायेपुस

रो अहोमुग्धकुंवन बोले तादरां मोनि बोध्नि मोनी बोल्यो इहो तजा वारे मोहि मागि२ दारिद्र
कहि मा गाड़न्या पुटदोइ मांगणु सुहामनी कले १ वार्त्ता एतो सुणि राजा द सहजारदी नारदी
या अनेव लै कह्यो बोजि आश्चर्यरी वात कहि तव मोनी कहेवे इहो घरनेकि तेननी सरै लोक
कहै असतीह निसदिन भमती दिशा दिशा तो कीरति कहै सतीद १ वा० इसी वात सुणि लाबदी
नारदि राया तादरांव ले मोनी बो लीयो इहो राजा राजा सुखे करे करि नेला सुकलीन आदि
अंत असुमध्य फुनि तीये विकारन कीन १ वार्त्ता अनेक ह्यो ईयेरे अर्थ सांभलिस्यो व
ऊञ्चुतमंइहतारी कथा विशाला नामनगरी तीयेनगरी मांहि नंद नाम राजा तीयेरे बहु
तरक जारो राजा विजयपालरो पुत्र बहुश्रुत नाम मंत्रिवी भानुमती रौरूपरो आसिक सि
नेदर्ष्टि आगेरा हे राज्य चिंतनि करे छि वारिस ना मांहि वे से ति वारे ति णभानुमतीनुं स्वाम्ही
पाप्रई रसचित्राई आपणे पासिरावो देष्या करे एक दिन प्रधानेकह्यो महाराजा राणीरी सूरति
सवादाबे तिणकरया वादीजे राजाये कह्यो न लोक ह्यो तीये दिन कंतीरासावी तारे वुलाय

रांणीरी सूरति दिषाय सिबी करार्इ पासि राखी तीये वेलाये सारदानंद एह वे गुरु आयो तिवारे गु
रुनेचित्र बी दिषायकह्यो भानुमतीरी चित्री ङरस आइछै तादरां सारदानंद कह्यो बीजो हो गुरस्
छै पणिमा वीजो घऊ परिति लोछै सो केछि तिवारे चितारे कह्यो अहो विद्या निधान नागी तो न छै
इतरे कहतां राजा विचारीयो तो एगुरु न लोनह्यो जीईये चीतारि अ संग की मांछै नहीं तर औ आत्मण
किसुं जाणे मांहि ली वात इसो विचारी क्रोध मन मांहे राखि संहता मेक ह्यो तुं सारिदानंदन तुं गरद
मारि जोतुं माहरो हितु छै अनेफु कमीछै तो तिवारे बहुश्रुत मुह ते ऊंहार करि फुकम सिरव हाइ सा
रदानंदन नुं घरि जे आइ अरु विचार्यो इसमे पंडितनुं क्युं मारीजै अनेराजानुं कहि समास्यो
अने सारदानंदनुं नुं हरा मांहि छिपाइ राष्यो स तो बीजी कणकाहि सी नमारीयो इतरे जाणि सा
रदानंद नुं जीव तो राषीयो अनेकाहीयो देषितु णीरे गुणबेरी होइ जाहरा दिन को दाआवे इहा
आत्मनो मुखदो षेण वध्यंते शुक सारिका वकास्तत्र न वध्यंते मोन सर्वार्थ साधनं १ वार्त्ता इसे
विचारि सारदानंदनुं घर मांहि राष्यो अरु मन मां विचार्यो ङि वारे राजा कि णही समे सारदा
नंदननेमा स्यानी पछ तावो करसी तिवारे हुं प्रकाश करीसि अथ आगे राजारो कुंवर बहुस्सर

सिंहासण
१२

कजारोकोलालहार सिकाररीतांईवनमांहेगयौ हुंतो तेथिसुं अरदेषि उवेरिवासे घोमेदीयो आप
णोरजपूतकोईनवुहतो असतिसलागी तेथिदेषेतो सघनदुस्तरीछाहलीहे असवमोलजावहे
अरु घलेविस्तारे एकवमोवनहे तीयेनीवैजाइजुनोरदीयो घोमाथी उतरपांणीथीमे घोमानुं
पांणीपायौ एतरैएकवाघआयौ तीयेवाघरीगंधहुंती घोमोनासिगयौ विजयपालकुंवरवनउ
परिचढीयो तेथिएकवानररहे तीयेवानरैकह्यो अहोराजकुंवरमोसुंमतरेमतो हुंकपरआव
तिवारैगतिपमी विजयपालकुंवरिऊपरगयौ वानरैकुंवरमंतीदालूंओदेषिकह्यो सुम
हराबोलामाहिस्ह इसोवानरारैकह्यो थके राजकुमारस्हूतो ताहराहेगाहुंतीवाघबोल्यो अ
रेवानरतुंमनुष्यवेसासमतकरै एमनुष्यनुनाछिदे विक्रेआपांबांदघास्या वानरबोल्यो हुंते
वेसासघातीनहोउं ओम्हारैवेस्वासेस्हूतो कहुनाषुं ताहरावाघतोअणबोल्योरह्यो इतरैरा
जकुंवरजाग्यौ इतरैवानरकह्यो हुंसोवुंछुं थेवेसो इतरोकहिवानरस्हूतो राजकुंवरवेबोले
ताहरांवाघबलेबोल्यो अहोराजकुंवरतुंवानररोवेसासमतेकरै शास्त्रमांहिकह्योहे इहो नदी १२
नषीस्त्रंगीनलो अरुवजिशस्त्रपांणि एतावेसासनकीजिये त्रीयअरुराजदिवांणि ॥ स्त्रीसा

वेरवैवकामि हणदेवेहाणलेहिवधलविस्प्रासादयिण नयकारीक्रेतेहि रवामी तीऊेकार
णिनेवानरनें नाषि कछुमादरोआहारहोइ अनेघूंनिर्नयहोइ तिवारैवाघरैकह्यो कुमरैवानरनुं
नाषिदीओ वानरपमतेहस्रासागयकमी तिवारैराजकुमारसरमायो अनेबीको तिवारैवान
रबोल्यो अहोराजकुमरतुंमननमैरे तेकीयोसोतुंजांणै हुंतोनेकहुंहीनकहुं इतरैउजातिहुयो
वाघआयणीओनगयौ वानरजोकानेस्वरूपजणविवानेवासेत्राहुकह्यो विश्वमेरा एहवे
त्राहुकहीनेकह्यो राजकुंवरविमहुंतीजनरिग्यारेघरिजाइ कुमरैतेत्राहुसांनलितसमांनतां
येकरिउन्मादरोगहुयो सोवनमेविश्वेमेराकहतो फिरैहे उथिघोमोकुमरविनाआयौ तिवा
रैराजावेडारैवासतेआपचढीयो असवनवनमांहेआयो देषेतोकुमरगाहिलोहुओफिरेहे
विश्वेमेराकहतो ताहरांराजउठनुंवहिलमांहिघालिघरलेआयो कुमरनुंपरबीयोकासुंहुयो
विश्वेमेराकहे बीजोकहुंहीनकहे ताहरांराजाचिंताउरहोइ बोलीयो आजम्हारैसारदानंदहो
इ तोकिसीचिंता ताहरामंत्रवीबोलीयो नगरीमांहिपमहकेरो महाराजचिंताकीयांकार्यनहे
इउद्यमकीजै इहा लोकांआलससारिषो वेरीइसोनकोइ मित्रनेउद्यमसारिषो जिकोकीयें 14

सिंहासन
१४

सपछीइ १ वार्त्ता मंत्रीरिक दीयमहीकेरीयो जोरम्काराही करानुं साजोकरे नथितुं राजामे
दीकरे इसमी वातवकुतश्रुतमंत्री नुहरामांहिजाइ सारदानंदनुं कही सारदानंदमुहताने
कहे जेजाइनेकहि म्हारी दीकरीछे सो राजकुमारनुं साजोकरिसी उवेकन्यानेकमर देवा
को मंत्रीवीयेजायराजानुं कह्यो तिवारराजाविजयपालकमरनुं लेइ दसश्रवासथासेवानसा
थेकरि वकुश्रुतरे घरिजाइवेगा तेथिमुंहतो मांहिजाइ सारदानंदनुं कह्यो पुत्री रोवेसकरि आमं
परीयववंधाइ आलिवेसालीयो तीयेरहीयो कमरजीकासुंहतांतक्ष्यो कमरजीवोलीयो विश्वमे
रहसोराख्सुलि सारदानंद इहीकह्यो इहा विसमेकरिविसास जाएआय सो सरलजीय
स सोनरगपुकवेनरगीयो १ एहहो कहि सारदानंवोलीयो कमरजी सांभलोवो किसी वार्त्ता तिवारकु
रवोलीयो श्वेमेरा विखामदीयो तिवारिवलेसारदानंद कहे इहो श्वेतवंधश्रीरामजी वरसगोमतीस्नान औ
रसवेपातक रूमि मित्रद्रोहनमिटान १ वार्त्ता इतरोकहि सारदानंदवोलीयो कंवरजी सांभलोछे ति
वारेकमरेदोइ अक्षर कीमीया विवेदोइ अक्षरकहे नेराभएदोइ वर्णकहे
तिवारे इसी सांभलि वलेसारदानंद कह्यो इहो मित्रद्रोहीवोरचौ औरकृतघ्नीजांणि एतीनेजावेनर १४

कजोपुससिहरिनोंलि १ वार्त्ता सारदानंदरहीयो कुमरजी सांभलोछो कुमरवोलीयो राजीजाने
ने अक्षरजोम्या एकअक्षरराकहे तिवारेसारदानंद कहे सांभलि इहो राजाराजकुमारको जोवा
हतकल्याण दानदीयेवुरेगुही देजसुपात्रेदान २ ईयेप्रकारिस्यार इहा सांभलि राजारो कमरन
लोकयो उन्मादरोगगयो ताहरा राजकुमारवाघवांनररो सर्ववृतांतकह्यो त्युंराजावमत्कारपांम
राजावोलीयो इहो नगरवसेकुमारिका वनमांहि क्युं वरित्र वाघवानरमनुष्यना क्युंकरिजाणेवु
त १ राजायेजिवारे इमपूछीयो तिवारे सारदानंदकहेछे इहा रसनासरसति निति रहे नगतिको
येगुरु सात उंगुचानु मनीति लजाणीयो तिमनरवानरकात १ वार्त्ता एहीकसांभल्यो राजाराभन
रोशेशायचायो परीपुत्र इरि करण्य सारदानंदरेपगेलागी अनेकह्यो मेमदान्धपरापकी औहेतो वि
एअन्यवकुश्रुतमुंहतो जीयेमोनुं उत्साहत्यासुंदालीयो असम्हारे पुत्रनुं जीविनदांनदीयो ईयेसुंकवि
उरणकसी ईजे इतरो वातमुनीरामुखथी सांभलि राजाकोमिदीनारदिराया इहा इणितग्रहदीनारज्ञात
पर्शनसहतदीनार वोले दज्ञाहजारहे गुणकरिलक्ष दीनार १ अर्थ कीयांदज्ञालक्षहे रीज्याहियेकरोम
जकारीजाणेसवे एछेनोहिवहोमि २ वार्त्ता इसोविक्रमादित्यसत्यावेदातारगुणरोजाण इसोकतोसे

सिंहास
१५

तो आगे कह्यो इसी गुण दातार होइ सोइ इण सिंहासण ऊपरि बैसे बीजो कोइ बैसण न पावे इति श्री सिंहास
ण बत्तीसी प्रथम कथा १ अथ आगे बीजी पूतली राजा भोज राज्याभिषेक करि सिंहासण ऊपरि बै
सण लागो इसमें बीजी पूतली मनुष्य वाणी कहि बोली राजा वीर विक्रमादित्य सारीखो उदार चित्त ह्वे
ई तो ईये सिंहासण ऊपरि बैसिज्यो तादरां भोज राजा पूछे किसो एक विक्रमादित्य हूवो पूतली बो
ली आवलो आसण ऊपरि बैसे सो [illegible] राजा भोज गादी ऊपरि न कीयो देवो पूतली
कथा कहे छे अवंती नगरी राजा वीर विक्रमादित्य नै राज करतां मन में ऊपनो प्रथ्वी री परिक्रमा कीजे
इसो जाणि कोई एक मनुष्य परिलेणनु मेल्या तीयां मांहि एक मनुष्य आइ राजानु जुहार करि कह्यो
महाराज विदेसि मग ह्वे तीर्थ पासि नदी वहे छै तीयां नदी मांहि जिको पुण्यात्मा स्नान करै तिवारै तो नदी रो
पाणी धवलो दूध सरीखो जल व्हे पापी स्नान करै तो स्याम काजल सरीखो ह्वे तठै एक ब्राह्मण साधक बै
ठो महा तपस्या दिक व्रत करै छै पिण देवता प्रसन्न न हुवै इतरी वात इतरा सुणनै सांभलि राजा स्व
यं चालि स्नान करि [illegible] आप अस्व इतरो सेवक सहित तीर्थ आयो पहिली नदी मांहि स्ना
न कीधो सरीर धोइ जल दूध सरिखो ऊजलो तरतो देखि आपनुं तो निकलंक जाणीयो अरु बीजा स्नान कीयो

बि

१५

ते मांहे दो ब्राह्मण रे महा स्याम काजल तरतो दीठो तीयां ने कह्यो थे बिजा ब्राह्मण दीसो हो दान पुन्य करि
अरु वारवार स्नान करि निकलंक हुवो जिवारै दूध सरिखो ऊजलो जल तरै तिवारै मो पासि आविज्यो
उवा नुं इतरो कहि आप देवालय आयो यथा जोग भक्ति करि देव दर्शन कीधो पछै ब्राह्मण नमस्का
र करि साधक पासि आयो अरु पूछीयो तो नु जप होम करतां कितरो काल हुयो तिवारै सा धक क
हे मांहरा बारह वरस हुया पिण देवता प्रसन्न हुवा किसुं करुं मो नै बहोत दुःख ह्वे राजा सांभलि चि
ता करतो हुयो कोई ईये रो तप तो इसो हुवो तो पिण देवता प्रसन्न हुयो नही इसो विचारि
करि देवालय जाइ अनसन करि बैठो दिन ५ हुया दुर्बल थयो सेवक घणा आतुर हुआ तादरां राजा
मन मांहि विचारीयो प्राण तो अवस्य जावणहार छै तो ईये रो इतरो दुखसीयां जाणस्ये इसो विच
रि पछे कांइ सुमन कादण त्यार हुयो तिवारै देवता हाथि झालि रह्यो अने कह्यो वर मांगि इ
सो वचन कह्यो पाछै राजा ये कह्यो जो मो नु वर दे पछै हुं मांगिस देवता बोलीयो तादरां दे
वतानु पूछीयो ईये ब्राह्मणनुं जाप होम करतां घणा दिन हुया ईये नै प्रसन्न हुआ किस कार
ण देवता ये कह्यो पहिली तो नदी ये न्हाय निकलंक न हुयो नदी रो पाणी एथि मंगाय न्हावे ती

नं

न

१०

येकरिनिकलंकन हुआे एथिमहात्म्यग्रहरैछे ओघटन्हायेस्यामकुलत्रारीरथीनकतरे तो
हरोशरीरसकलंकहीरहे ओरसांनलिइही अंगुलीयावितिसवाणिलो अथवा नलेनाम मेरुलंछि
तरूपकरे तोफलनावेगाम १ तीरथमंत्रसदेवगुरु उपअजोतिषवैलईयेक्षिसमी नाथना सिद्धि
तसमीकवेअेन २ नांदेवताकावमे देवतानयायालि देवनमार्दाभ्रवमे नावैदेवनिकालि ३ वा
लो ताहरोराजाजालीओ ईयेरीसहीछइ ज्ञावनानही एणिदेवतानेउणामकरिकह्यो देवीजी
मोसंइसनबो तोइयेनुंवरद्यो ईयेघणवरसकष्टकीयो अरुईयेरीकामनापूर्णकरे जुमा
दरोंडुवमिटे ताहरांदेवताकहीयो तथास्त इसीनांतिराजावीरविक्रमादीत परदुखकातर
एहारइसीप्रकारेदेवतासंवरपाय ब्राह्मणनुंदिवराय संतोषपायो उजेणीआयो देराजानो
भईसमायरदुघनेजण परोपकारीहोइसो इणसिंहासणेवैसे वाकारोएहिकांमनही इतिश्रीसिं
हासणवत्तीसीरीबीजीकथापूरीहुई २ वलेराजाभोजओरमुहूर्तराजाभिषेककरि मंगला
वरणकरतोसिंहासणेवैसणआयो इतरेतीजीपूतलीबोली मनुष्यबोलिकरि महाराजावीर
विक्रमादित्यसरिषोउदारचित्तहोइतोइयेसिंहासणेवैसी ताहराभोजराजाकहे राजावीरवि

१६

क्रमादित्यकिसमोहुतो सांभलि तीजीपूतलीकथाकहेछे उजेणीनगरी राजाविक्रमादित्यराज्य
करतो विवाहमहोत्सवकरणरीताई आरंभकीयो ताहरांरलाकरसमुद्र राजारोधर्मनाईहुंतो ती
येनुंनेमणनेवासते वीहीबाह्मण साथिदेमेल्हीयो कह्यो राजारेविवाहछे ईयेऊपरथानुंतेम
णछे विलंबमतिकरो इसीनांनिसिधाइ ब्राह्मणसमुद्रतीरिजाइ चांतीवायलदे ब्राह्मणेमुखकं
नेकह्यो ताहरांसमुद्रसंतोषपाइ विनयकरिबोल्यो ब्राह्मणनुंनमस्कारकरिकह्यो महाराजनुंप्र
णामकहिज्यो अरुम्हारोआवणोनहीसीजहेनलीजुगतिकरिवीवाहकरिज्यो उमाहिनांमनहोछे
रुसीवासेसीम्हावोमनो रतनच्यारिमोकलतराराभेल्हीयाछे तेरतनांरोमहात्म्य रतन१ जोजनदेण
रोवइ रतन१ घोडाहाथीरोदेणवाणछे रतन१ मनोवांछितद्रव्यद्रवे रतन१ मनोवांछितगृहणादरे
छे इसीनांतिरतनच्यारमेल्हाछे सोसंनालिदेज्यो एतासमाचारकहिब्राह्मणविदायरोकी
इकदेविदाकीमी अनेकह्यो कहजेअवसरमतहुको दिकपालहुविजांनवंत जलस्थल
देवांनेवेत्रपालअरुवत्रीसराहकहीनाठीकआवणनेहिज्यो वलिप्रधानदूजाकरिज्यो इत
रामुखेसमाचारकहि ब्राह्मणनुंविदाकीसे ब्राह्मणह्यातोसमुद्ररोसतिकहेछे जहांजन्म

वले

सिंहासन मर्यादिन लेपि कवकुंजलजंतु सोनमिकोयं तेसो धीरमंनीगविराजे तो समस्त्रवरक वएनविरा
१७ जे १ मेघमालावलिकीर्थेनुकावे सुणिकंवानयर्ष मिसरिं दरनवानलवलिक्संगीकारे नगरम
रणकोधसंसा २ मदिमाएकमुयेकरितरी क्युंकरिकदीराइवकतेरी स्तुति सुणि पुसीहुओ
रत्नाकर विक्रम ऊपरि प्रेम वकुंतधरि ३ वलेकद्यो समुद्र विक्रमादित्य इरिष्टकैलिणम्हारे
वहनने हुवो सेदन इरिकुओमिरे जोमन सार्वा प्रीति इरिकुओ मभिन्नत्रयिण जात्रिक्रम
दनीराति १ वार्त्ता इसी स्तुति करब्राह्मणपाबोआइ विक्रमादित्यनुं मिलीयो अरुसमुद्रराम
यवचनसमाचारकह्या च्यारिरत्नसमुद्रेमेलह्या सोदख्या दाखिदीधा फलकह्यो राजा सांभली
पुसीहोइविचारीयो ब्राह्मणगयो आयो मुहूर्त्त रोकीभो तेवासते ब्राह्मणनेकह्यो च्यारिरत्नवेतेमें
हएकलेणसांभल्यो वीजाम्हानेद्यो तिवारे ब्राह्मणे विचार्यो किसो लीजे मुंझाइरह्यो तिवारे ब्राह्म
णकहे घरे जाइ वरनेटानेपुछि विचारकरिलेइस राजा कह्यो जा वले जा जेकोइ थारे मनमाने सो
राखिजे तीनम्हानु आणिदेजे ब्राह्मणरत्न४ घरिलेजाइ स्त्रीपुत्रपुत्रनीवहुने आगए ऐ च्यारिरत्न १७
लेवोसविचारकीधो रत्नारा गुणसांभलिइनेक सो जेकदोरत्नलीजे तिवारे बेटोकहे धोमादाथ

वस्तु देणवालो रत्न नलीओ तो कुंमुरलेनी सरिजाइस ब्राह्मणसी इसाकहे जो कनदेणवालो रत्न नलीओ
तो कं विसवाइमरीस दीकरा रोकहे ग्रहणावस्त्रदे नेरत्न नलीओ तो कुंरुओ पनिमरीस आवहु
जोलेइव्युदेतिको रत्नलीजे तादरां घरेरे च्यारे जणे मांहो मांहि कलहहोलगो ब्राह्मणे च्यारे रत्न
राजानुं फेरि आणिदीधा तवराजा पुछीयो ब्राह्मणक्युं ब्राह्मणे मांमी घरकी वातकही देमहाराजइ
णलोने घरमें कलहहोलगो तेवासते च्यारे रत्नराखीजे सो सांभली राजाइ हो कह्यो उद्यमसा
हसधीरबलि बुद्धिपराक्रम छे जिणनां बढदी सिप्रगट देवसानमो ते छि १ काज्य आवे रविरदे अरुफि
रिकिहिजाविजोइ लक्ष्मी अस्वार लतणी गतिन जाणे कोइ १ वार्त्ता अस्मनमें विचारयो माहरे स
नारो पुरसो वे तोकि सुं इणे रत्ने इसो जाणि च्यारे रत्न ब्राह्मणनुं दीया ब्राह्मण पुस्याल होइ घरे लेग
यो उवां च्यारां मनोरथ पूर्ण कीधा तीये कारणि राजा वीर विक्रमादित्य सरिखो होइ सो इणे सिंहास
णवेसे इति श्री सिंहासणबत्रीसी री तीजी कथा १३ वले औरमुहूर्त्त राजा भोज सर्वसामग्री मेलि क
रि सिंहासणे वेसणलागो तिवारे चौथी पूतली बोली अहो राजा भोज इयो सिंहासणे तेवेसे जेवीर
विक्रमादित्य सरिखो कृतज्ञ होइ राजा भोज इसो जेविक्रमादित्य किसो कृतज्ञ हतो तिवारे

चौथी पूतली कथा कहै छै उजेणी नगरी राजा वीरविक्रमादित्य राज करै छै तिहां नगरी चो दह्य
वणारो जाणि एक ब्राह्मण वसे पिण वणब्राह्मणरे पुत्र नही तिणरे ती थेरी स्त्री कह्यो इसनी क्यमं
हे देवता आराधन करो ज्युं म्हारे पुत्र होइ पछे थारा वरै तो श्ववाडी परणस्यां तो थेरे पुत्र हुसी पिण
वय म्हारी गया पाछे मांतु कि सो सकाइ ब्राह्मण बोलीयो मानुं नरो सो नही अने कोई खरचावे
तो द्रव्य घणुं हो वसुं गुरुरी शुश्रूषा सेवा करु अनु श्रीरविद्या घणी हीवे पिण ज्ञांस लिखीयो हो
इ ते थि हीं हुदोइ दोहा पंचे पतिजं ती कीया अरु पंचे रोपदक्षार दो नुं सती बालिक गिणीं तो
जास कुइ इतुणप्रकार र वार्त्ता तो पिण वहे गोत्र देवीरी आराधन करो ज्यिम त्रमनै परमेश्वर दे
ि ब्राह्मण कह्यो थारे कहीये इष्टा करिस इम करि ब्राह्मण ब्राह्मणी वि के गोत्रदेवी पूजा करे ती
ये पुण्यजोग ब्राह्मणरे पुत्र हुवो तिणरो नाम देवदत्त थाप्यो तीयेरो नाम कर्म जातकर्म अन्नप्रा
सनइत्या कर्म व्रतबंधन विवाह करि इव्य खरचीया पढाय विद्यावंत कीधो एकही जुपुत्र हुतो
सो लाडकोडमण करि जतमो टोहुयो घरकार्य संबो घरसं वासो तिवारे ब्राह्मण ब्राह्मणी दोनुं ‹१८›
द्रव्य वपुत तो इतिर्थ हाल्या वासे देवदत्त आपणो घररो नारवला वतो सुषे रहे इक दिन होमरे

वासते इंधणी लेण आथही का जंगलमें गयो तेथि महावनमां हे किण थकी अकस्मात रो तिसा
यो थकी दिसा न्हूली पड़ी पासे बानर दिठ एकाकी वीरविक्रमादित्य आयो ब्राह्मण देवदत्त नै देषि
हाथरी सेन करि यांणी मांग्यो सो यांणी कं थे नही देवदत्त राजानुं उलषीयो आमला नी फल तो दिनी
लो राजानुं दीयो आमला व्यार आपकन्हे राख्या अनेक हो मदा राजा यांणी ने नोही कहै छे अमीं हो
हु म्हारे वासि धो कोच जावो कोस ४ गया इतरे राजारी मुषसूक वा लागो पांणी कोथि किण छे म्हारा प्र
णजाय छे ताहरां वलेवी जो आवलो दीधो अरु आगे दोडीयो कोसेक गया ताहरां राजा बोलीयो रेब्रा
ह्मण म्हाहरा तो प्राण मुक्त कै छे अरु पांणी कोथि छे तितरे एक वले आमलो दीधो सो मुषमांहे राख्यो आ
गे चालता तितरे एक तलाव आयो ताहरां राजानुं पांणी पायो आप पांणी पीयो घडी बार राजा ब्रा
ह्मणा वाद रूप परि देवता घोमा नुं पांणी पायो राजानुं पवन करण लागो तेथि घडी दोइ वेसि आसा
न करि राजा असवार हुओ देवदत्त घोडा आगे हुवो एतरा नु पवास आइ मिलीयो देवदत्त उजेण
री मारदे षाकि आपहो मरी ताई सनमधिनुं पाछो वलीयो ताहरां राजा कह्यो तुम्हासुं मिलिजे इतरो क
हि आपणे महिले गयो ब्राह्मण समधि ले घरे आयो दीहा दिन सम्मा मांहे वेसि अरु स्तति करण लागो

सिंहासण मालसमेल्हिदेवदत्तनुंबोलायो अबकहीकैमीनुंआजपवैराजदेवदत्तरीदीकोबे जंदेवद
१९ त्तसुंकहिजैरलक्षईस इतरौकहिसर्वकमेतीयांजपरिकीयो अरुदेवदत्तआवेतिवारेआधीरा
दीवेसलनुंद्यो वीजेकिलहीसुंबातनकरै इसौकाइदीराख्यो अरु सुवासनवैवीदरबारआवे पणवेरा
काघणगुणवोलै देवदत्तैविचार्यो जेराजामोऊपरिइतरीमहिरवांनगीरायैछै सौसावीकेकमी इसोम
नमांहेविचार करीक्याकरणवासतै एकदिनराजारैकुमरमांहिलीदोढीमांहिएकलौरमतो तिवारैवां
नीउठाइ सुघासनवेसाड पछैमोतीउतराइलीनेसेघरिलेआयो आणिमालीयेहिनेलायारिवेसालीयो
वासैराजारैमहिलसोरपडीयो जेकुमारलानैनही वोमनमालसरोन्या खवरिकीधी किहांईसोधिपाईन
ही राजियहोराजारांलीबहुतइंघपायो सर्वलोकहिलगीरहुया किसुंकरैकोईकोरनचालै तारहारौसड
ॐ वेसिरह्या तिवारवडीराजकुमाररामोतीकानांसुंउतारि देवदत्तनेआपणमालमेल्हिदेववानेबोर्दछेआ
वहरीयेरुबो थारेलमोतीकढाया तीथीकरुयो प्रोहितदेवदत्तरीमालमलुं देवदत्तराठैउलेराजकवहरीया नुंमातीदेखायाज
रीयेकरुयो मोतीतौराजकुमाररानानराठै अनेओमालसकरैप्रोहितकीरा तारराजकवहरीयेकयो १९

मोतीदसरुरजारसूंपांनराछै जोथारैखरसलाहोइसोमोतीमेल्हिजाइ सवारेरूपीयालेदेस्यां उवे ७१
कुस्योनलांमोतिमेल्हिगयो वासैमोतीलेराजापांसिगया वातकहीपगलाधो जेदेवदत्तसुंनकीयो गा
कलोकबातसांभली मुंदोपायो कोईकहैजनी इणरोजनंदवी पांणीमांघालियीली जेकोईकहैइस्त्री
रोघरलूटिलीजे ईयेनुंगरदनमारीजे अबवादेसथी परसौकाढीजे थिणराजामुखथी क्युंहीनकहै
प्रोहितथिलाथो थेदिनदरवारगयो तारहांकेईकउपरागाढौइंधैवा क्यांणकरीफिरकारसांचल्यो राजा
रोवाकरकोईसामनायो किणहीमुजरोनकीधो अमेराजारीखरूरगयो तिवारैराजाकठियावमाती
नसांभ्लोआयो आधीनादीवैसालीयो अरुदेवदत्तसुंवातकीधी राजाउसमैहीमनरखीयो प्रोहितउ
मैरीआदरसुंविदाकोइघरआयो बीजेदिनकुमरनुंसुषासणिवैसालि [illegible]ईयाकीनपैछुहरकागद
आगेमेल्हि आपदेवदत्तसाथेवंदीजे तमासौकरतौराजारीहजूरआइकमरनुंपाईलगायो अनै
करुयौमहाराजपरीक्षारीताईमेइतरोकीयो तो राजाकहैजंरकआमंलाभीजेणलक्कवी तारहां
प्रोहितइंडोकहै दोहा दोइपुरुषसंसारमे धरतीन्यारधरेहि इकउपगुणजांणही इकोउपगारकरेहि
९ १ [illegible]वलीकीलीराजानीक इसमीकृतकालेइ तौइणीसिंहासणलेवैसे इतिसिंहासनवत्रीसीरीचौथी

सिंहासन कथा ४ केरिराजाश्रीरसुकूलसर्वअभिषेककरिविधिसंयुक्तहोइ सिंघासणिनुक्यो तिसमै
२० पांचमीपूतलीबोली अहोराजानोजईयसिंघासणेतिकोबिसेजीयेमांहिगुणीरगुणहोइ राजावी
रविक्रमादित्यसरिखो राजा नीकोबोलीयो विक्रमादित्यकिसमोसोगुणीरहतो ताहरांपंचमीपूतल
बोलीकथाकहहे उजेणीनगरी राजावीरविक्रमादित्यराज्यकरता एकब्यापारीजुंहरी जुहर
रीरुमेल्हिराजाआगेरखानुंमिलीयो राजाउवारीकीमतिकरीइ रुपीयांगिणदीध अरुकही
योआरैघणमोलोकोईहीरोहइ ताहरांएकहीरोअंधारैउजवालौहारीकरणहारकाढिदिखायो तीये
रीकीमतिमोलनोनीनेकोनकरीकीयो म्हारेघरइसमारतनदसबीजाछै पांडाकहीयो वलेकोईछै
जुंहरीकह्यो वलेइसोकोईनहीं ताहरांराजाकहीयो म्हांपणिदेखियासाइ ताहरांवालीये
पारहाथलगायो तिवारैराजादसहीरांरीकीमतिदसकोडिरुपीयानरिदी क्यांअरुयरतीलरो
मोलससाथिदीयो दिन४ दीकआवणरीकीयो चालीयोराजारामालसानुलेजाइ रत्नदस
अंधारेउद्योतकारी गिणदीया सो जतनकरिलेआवसो दीधि नदीपुरिआई इयेक कोरतरीजो
यमहीजोजीवरोजोषम असुराजारीआज्ञापालणी चीछेदिनथाएलोपणो ताहरां विचारि २०

करिमनमैविचारीयो राजारीआज्ञापालणीजरूरछै इसो प्रस्तुरीआज्ञामेटणी अरुकुंदीसुव
णीनारि मर्मकिणहीरोछेदणो सोविणहथीयारदियोमारि १ आणमानणीराज्यफल तपस्यारो
फलसील विद्यारोफलज्ञानगुण धनफलदानसुसील २ इसोजाणिनैकोईतारूहूंतातिणनैक
हीयो मोनुंपारपुंहचाव जेवैकहीयो थारेकिसीउतावलछै दिनदोइजककरि नदीपूगारह
सी ताहरांनुथारैनदीउतरिपरिजाजे राजाउरुपबोलीयो मोनुंतोआजमहाराजाथाइजागण
रीकामछै दसेरतनराजारेहाथिजाइदेणा जरूरछै ताहरांतारूइसकीगरुवीवानसानि
लिकह्यो पंचरतनमोनुंद्यौतोपारउतारुं नहींतोइसमीमहानदीमांहेप्रैसतोहूवे ज्ञास्त्रमाहे
पिणकह्योछै इसो तरिवोमहानदीतणो अरुजोरावरसुंद्वेष महाजनसेतीरूसणो एतावर
कविनाश १ बाखौ तिवारैपंचरतनतारूनेदेइ उणतारूयेपांचरतनलेआयलेघरेरतनमुंकि उ
णराजपुरुषनेकांधेचढाइ नदीपारकितारीयो आपनदीउलंघराजासुंमुजरोकीधो गांठि
बोलिपांचरजारीनिजरिकीधा राजायेकह्यो बीजारतनकिहां उणेकह्यो महाराजनदीपू
रआई सोकहजाणेविदिनरहै च्यारदिनरहै अनेम्हारीप्रतिज्ञाअरुराजारीआज्ञासंबंधीरा

णी महाराज सुसुखस्यू होइवो राज्य पायो तेवासतैमहाराज पाघरतन तास्नैदीस एतौमहा
राजा सांनतिभुसीहोइ रहतापावरतनउलमिहीजवगस्या तीयेकारणिकहंतु इसमी राजावीरविक्रमादित्य
रीगंनीरताइहोइतौनिचंतइथेसिंहासणैवेसो इतिश्रीसिंहासणिवत्रीसीरीपंचमीकथा ५ वलेश्रीसुइ
भजोवराइ राजानिपेक सामग्रीकरि विधिसंयुक्तहोइ सिंहासणवेसणनुंद्यो तिसमैछहीसूतलीमनु
मनाधाकरिवोली राजानोकथारीवीरविक्रमादित्यसरिषोउदारचित्तहोइ तोइथेसिंहासणैवेसि नहीतर
तौइथैसिंघासणनुंदेषवोकरो राजाकह्योकिसमोएकउदारचित्तराजावीरविक्रमादित्यहुतो तिवारेक
थाकहैछै उजेणीनगरीराजावीरविक्रमादीतराज्यकरैछै एकदावसंतसमयदरबारआइकह्यो वनमाली
नीतरितिकीयो वनमालीकहैमहाराजउम्हाराकीनावनमांहे आंबा नीबू जंभेरी बीजोरो नारंगी केलि
खजूर सहतूत पीलू नीबू बदरी दाषा चांपा जाइजूही केतकी कमलफुलवादि गुलजाति वेलि ओर
अनेकजातिवृक्षफल्याछै केफल्याछै केमोर्याछै वसंतक्रीडाविहाररोसमयछै तीयेकारणिकहणनुं
आयोछुं ताहरावइराणीसहित बीजाराजलोकसर्व औरनृत्यकारणी[illegible]वनिता तीयारा ताइका
साथेकरि कीडावनमध्ये जाइयापसिद्ध्या तेथिवनमांहेवानरीवीचिमेएकोका हीनेजावांध्या कोकिला

शबूहैछै नलवपलायाछै रात्रिदिनवाजिनाचैछै तेथिवोमसंसारवणाइ राजाराणीसषीयांसहितकनांणी
कीथैफुलचुलेछै असरंखुधिर राजाराणीनुंदेछै असहिं[illegible]क्रीडाकरैछै रात्रिवांदणीराविबावणाकाराइ
रागसांभलैछै यंत्रवाजैछै नलीरकथावार्ताकिदेछै सषीयाराबृंद अनेकजातिकरि राजारीअमूषा
करैछै नृत्यकारीयातरिनाइकासाथिलागाफिरैछै तौथेसमैरेविषेएकतपस्वीडर्वलआयुयावनाकरण
लागो असवफुलउवेवनभूतपस्याकरतोहुंतो अस राजारोजनांनोदेषि नष्टवैराग्यहुवो राजादीठै
रहीयोथारेकिसुंचाहीजे ततपस्वीकहवालागो हुंदेवीजीरोआराधिकहुंतो सोदेवतासत्रिआइक
ह्यो परलोकरासुषचाहैछै केइहलोकरासुषचाहैछै तिवारेतपस्वीकहै मेइहलोकरासुषमांग्या तिवा
रेदेवतायेकह्यो जोइहलोकरासुषचाहैछैतो एथिराजावीरविक्रमादित्यराज्यकरैछै तीथैनुंजाइयाचना
करि उंइथैनवमांगिससोपाइस तीयेकारणिमहाराजापासिआयोछुं तपस्वीकहैछै अनेवलेसांभली
पइमारीसोभलीयांमुख विकसतकमल तीयांसरिषानेत्र सुसोभितहास्यसोनेसरीषोवर्ण स्यामचमर
केश उंचाअसकुचिन हाथीनाकुंभस्थलसरीषाकुच मोवोछेनितंवप्रदेश मनोहरवांणी इतरा स्त्रीरास्वरू
पिकरहलाछै इसमीस्त्रीकोवल्लभहोइ तीयेनुंदेषतांबीजोकोईसुहावैनही ताहरांतपस्वीरावचनसांभलि

मनमांहे विचास्यो एतपस्वी अनमपरिणांमी हुयो ईथेरो तपवन हमोयो परं ईयेरो उपवरहीकी
यो आही छै अरु ईयेरो मनस्त्री येवस्यो छै इहा चित्रामें त्रियमनहरै दीवांवबरनरेद वतनविलास
कटाक्षकरि त्यांरो किसुंकहेह १ कर्णनाकविनुको त्रीया हाथपाउ करिहीन ताको संगतनिवारही वै
रागीवरवीन २ बर्णा सो तो ईयेकै लक्षीनाकरता योवनवती सरूप स्त्रीयां दीठां कुसी तीये देखले करि
ये तपस्या अरु वैराग्यगयो पिण किंतरी तपस्या कीधी तितरी तपस्यारो फल कुसी इतरो विचारकरि
तपस्वी मुनेमे दुजायकह्यो अहो तपस्वी विषयसुख तो संसारमांहि नंदनीक कह्या छै अरु हुं मांगे छै सो
किसुं काले छै उणेकह्यो महाराजा सिद्धांतदी वो छै संसारविषय सुखसुंही परं मैं मांग्यो सु पाछो तो तियेरो
किसु हुवो छै ताहरां राजा विचास्यो सो पांणी रो त्रिसो होइ सो क्युं पूछेनही तियेनुं पावेहीपावे इहा साक
इहीड़ करक चौरयस्वंपवराइ अणसखो जलपाईये कोयीको कैसे आय १ वारता तो तो ईयेनुं एकसो
सी मुग्धा अरु प्रगल्भा छो अरु ईयेरे ही नामे गांमवसावो अरु थारे गांमनवीकाई आनेछो अरु वृजती
रहिदे गांमरो ठाकुर करो ताहरां राजा राजाकुंकमसेती वांनलमैं नवो गांमवसाइ तेथि अनिषेककराइ तिज
कदेवानलनुं वारे गांमरो ठाकुर कीयो पछे राजा वनविहार कीनाकरउजेणी आयो तो इसमो उदारविक्रमा

दीतहोइ तो ईयेसिंहासणेबैसे इतिसिंहासणबत्तीसीरी छठी कथा ६ बीजे मुहूर्ते राजा अभिषेकक
रि विधिसहित सिंहासणे बैसनजागो तिवारे सातमी पुतली बोली अहो राजा भोज ईये सिंहासणे सो बैसे रा
जा वीरविक्रमादित्य सरिखो साहसीक हुइ ताहरां राजा भोज कहे किसमो एक साहसीक हुंतो ताहरां सात
मी पुतली कथा कहे छै उजेणीनगरी विक्रमादित्य राजा राज्य करे छै तीयेरा राज्य विषे लोकां ने सात व्यसन निषे
ध आपआप ए णमृलभिचारकोई लोयेनही आगम्यविचार सांजलबो तह्वनीकर्या धर्म करता अनिपामे नही
पावकं तीवीषे कीर्तरी वांना परोपकाररी बांबा सत्यनाय लोगनि जीवनता पारकी निंदा करता मोम आ
त्मारो कुसुमा परं मात्म चिंतन संपदा अनित्य कांणिने उदारदातार इसी नीतिरा लोक वसै तिहां उ
जेणि मांसुधनमांम साहवसे तीयेरो इव्य प्रमांण कोई करि सकेनही पिण जेवस्तु नगर मांहि वांहि
छै सो तो ये रे घरमांहि लाभे अवेरा घररी वस्तु पुले ताहरां तीये वस्तुरो तुकालहोइ एकदा तिण साहे वि
चारीयो ईयेनव तो धन घणुं ही उपजावो घणा सुख पांम्या घणा सुख भोगविस पिण परलोकनो उपाव
न कीजे नहीतो कांईनही तेथि कह्यो छै इहो मनोकांमना स्वरण लक्ष्मी जयेकर्ता होइ जो परलोक न
साधीयो मनपछतावो सोइ १ जोरिंद्र माल मरद्दिया खजिरै ईने लात पिण थेरी मोहन मरदियो जंसु

 पुतलीकथा सात ७ जैसी सारा ही यो वडुं जीविया तो कांइ परमइ सौदीतनदि वथाकमायो सादि इ वात्ती
 इसो विचार करि दान वंनत्रास्त्र मांहि कह्यौ छै सुंदर नरी अकावांसी जैकोगी संन्यासी वे इमव अतीत अभ्य
गत जो आवे सो पूहिली सुधन साहरा घररी सदाव्रत ले वीजी ठौड़ पाछे जावे इसमो प्रवर्त्त कराइ आ
पस्त्री सहित तीर्थयात्रा चालीयो तेथि महातीरथ पर्वत ऊपरि देवालय वामनागी कामी इसिला ऊपरि
रो इधन हो इसिर कुसमदीठा तेथि ए लिषित दीठौ अस याची यो जोए दोनुं स्त्री पुरुष वे एहि कोई सा
पुरिसा होइ आपलो सिर आपली हाथि काटि देवतानुं वलछे तो ए दोनुं जीवे अस साध जाणी मृतक
ना भावे नरी ए आश्चर्य हूवो अथिरित घनै घनो धर्म नंकलघन लसमछ कीधो अणकीयो करे जो
सै सो विभिहछ १ वात्ता इसो आश्चर्य दीठौ घणो दीइव्य परचि जन्मीरो जावो छै तीर्थयात्रा सफल का
१ मास वड छे घरि आयो वीके दिन घणो नेदआगि धरिम सा राजा विक्रमादित्यसुं मिलीयो ताहरा विक्रम
सीधन मा वाजु पमवनी वडो अरु तेथि लिखीयो छै जै कोई साउरस परोपकारी आइ आपलो माथो
काटि देवतानुं वलछैलो एदोनुं जीवे तिवारि सुधन साहनुं कह्यौ जथिया तो मुहि कौतक देवां ए तो कु

रि सुधन साहनुं साथे लेम हातीर्थ जाइ वे स्त्री पुरुष पडीया देखि लिषितवाचीयो जीवे अंकमलाणमवे से
सहीजीवसी इसो विचारि स्नान करि वहुत दान करि पमनगहाथि लेसाहस धरि आपलो सिर काटण लागो
इतरै देवता ऐ हाथ ग्रह्यो ओ रकह्यौ मैं डोलीयौ सत्पुरुष पृथ्वी मांहे छै केनछै अरु कांइ इरो सेवक छुं
मैं माया करि परी क्षा लीधी सो तुं पृथ्वी रौ शृंगार साहसीक सत्पुरुष दीठौ आवती इं इरै दिवाल क्रुइं स राजा
कहीयो ए स्त्री पुरुष जीवीया देवुं ताहरां उवा नुं जीवाया देखि वस्त्र आभरण देवि आपसाह नुं लेउजी णी आया
पुतली ये कह्यौ इसो साहसीक कुइ जै तो इयै सिंहासनि वैसिजै इति सिंहासन वतीसी री सातमी कथा
७ ओरसमइ ये राजा भोज मुहूर्त्त अभिषेक सामग्री करि सिंहासनि वैसण लागो इतरै आठमी पुतली
बोली अहो राजा भोज इये सिंहासनै तिको वैसे जीये रै विक्रराजा विक्रमादित्य सरीषो साहस कहो वीर
राजा भोज कहीयो किसमो साहस कुं तो पुतली कथा कहे उजीणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य रा
ज्य करै छै एक समय राजा रा मन मांहि उपनी च्यारि दिसा री पवरि मगाउं इसो विचारि च्यारि दिसि च्या
र दूत मोकलीया तेमा हे उत्तर दिसारो दूत पाछिली आय प्रणाम कीयो मरुस्थल देशि तठै एक व नो भना
ढ्य वाणीयो छै तीयै वाणीये एक तलाव कराया तीये मांहि पाणी न रहे बंधतो जिनी सरि जाय अथुतजा

सिंहासन वसुसिकाय पिणयांणीनरहे अरूतलावदेवलजायकहे पासेदेवालयसंपीरीमया एणितलाव
२४ नुंवनीवोम कीयांणीनरहे साहवकतचिंताधरवे तीयेसमेआकासवांणीवोली जोईयेतलावेतोप
णिरहे जोवत्रीसलखकणोपुरुषआपणोसर्वलोही आपणोदेवतानुंवलहेतोपांणीयाहरे तिवारेस
हिदरानारसोनारीपुरूषकराइ दमदमेऊपरचिदोनिराधीयो जिकोआवेतीयेनुंजीमाइकहे ओसे
मारीपुरुषजिकोआपणोशरीरसमर्पे लोहीबलदेसोल्ये तीयेरावेदावांसेसुबीहोइ सोलीनीघ
णहीआवे इसमोसाहसीककोईनाचे ताहरांविक्रमादित्येकहीयो देखुंतकिणहीनुंमतकहे आपा
वेअंतरजाइकोउकहेविआवस्यां एतोकहिप्रधांनमनुष्यरूंलातीयांनेकहीयो दिन१०कोउकहेपण
तुंजागसी वासेनलाजावताईकरीजो अरूइतनुंसाथिलेमरूस्थलआया तलावरीरखनाहीतो अ
रूदर्पितरूवो रात्रिएकुदुस्का तामांईतमासेदीठो पाछेअर्द्धरात्रिसमयराजातलावमांहेजाइ
नीरहिकहीयो जोदेवतावत्रीसलखणोपुरुषरोलोहीमांगेछेसोआवीहपतिकवो एतोकहिखड्ग
हाथलेगलोकाटणलागो तदिदेवताहाथपकड्यो अनेकह्यो अहोसत्पुरुषमांगि२कंप्रसन्नहुयो २५
हुं ताहरांराजाकह्योप्रसन्नहुआवोतो संसारउपगारनिमित्तसादकरायौंछे तलावसोभरीयेर

हो श्रीमाणुंवुदेवताकहीयो तथास्तु राजासाहकुंविनावलवाधा उजेणीआयो इतलीवोली राजा
नोजइसमोसाहसीकहोइसोईयेसिंहासणेवेसे इतिसिंहासणवत्रीसीरीआठमीकथा ८ औरदि
नमुहूरतदेपि सकलअनिकेकरि सामग्रीविधिसंयुक्तसिंहासणेवेसणनुंत्यारहुवो तितरेनौमी
पूतलीवोली वस्कतीथकी आपोसमातोजइयेसिंहासणेसोवेसे जियेरेविक्रमादित्यसरिसोमन
८ हहोइ सोसिंहासनेवे राजाभोजकहीयो विक्रमादित्यरोमनकिसमोहहुंतो सोकथाकहेछे उ
जेणीनगरीराजाधीरविक्रमादित्यराज्यकरेछे तीयेरोपुरूकरपुरोहित तीयेरेदिवाकरनामपुत्र
पिणमहामूर्ख तीयेनुंएकसमयपितासीखेदेछे अरेपुत्रकिसुंकरेछे मनुष्यजन्मपाइसुंहीहारेछे
इहां विद्यागुणजंयांरेनहीं औरतपोगुणदानगुणज्ञाननहि तोनविकासुकीन १ सुविद्याठाउ
रंगामरो उजंवरावरनोहि वाकरगामहिमांनीयो विद्यावेतसवथाहि सन्मांनीं ताहरांपितामातारी
सीषसुणि दिवाकरवणारसीहालीयो तिहांवंडमोलिउपाध्यायनेआपराकरिआराध्यो इहा श्रु
रूषायाइव्यकरि अरूवकाराइतहोइ विद्यारपाइये औरउपावनकोइ १ वार्त्ता ताहरांउवेउपाध्या
यसंतोषपाम सिद्धसारस्वतमंत्रदीयो तिणेकरिसारस्वतमंत्रिसाधिमहावंपितजन्नो विद्यावंतहोइआ

वतीमारगमांहिकांतीपुरनगरआयो तेथिवेस्यारीवडीनरमोहनीनाम नवयौवना सर्वांगरूपसोभा
स्यलावण्यगुणधारणी थिगतीथेनुंराक्षसनोगवे मनुष्यरावसातमास्यां ताहरांलोकसरसनारहे थिल
मरणरेनरकोइजाइकोइनही दिवाकरजवेनंदेथिआसक्तकदी मीलणीसुरतिगई सूखगई रात्रिं
दगई सरीरक्षीणहुयो प्रोहितसांभल्यो सोदिवाकरनरमोहनीसुंआसक्तकदीवे आयनसके न
एयोघएयोहोवे थिलकामअवस्थासगलासुंसबल ताहरांप्रोहितप्रसन्नजाइतेमिल्यायो थिलदिवा
कररीमनउदीरहणरीमतीकुंतो उजेणीआयो राजासुंमिलीयो आसीर्वाददीधो राजापवीयोमांहे
मांहे थानेघणादिनकुंलागा दिवाकरैकह्यो महाराजएकबातछे सोसांभलो कांतिपुरनगरएकवे
श्याछे सोसांभजोनरमोहनीछे अतिसरूपयौवनावस्थाछे सोमनम्हारोतथिछे तीथेसुंलागिरह्योछे
मोसरीखाबीजाघणांहीतथिअनूजीरह्याछे मोनुंप्रोहितजीलेआया उवेनुंराक्षसएकदेथेछे सोवे
जाकिणहीनुंमिलणनद्यै अनेमिलीयानुंमारे तीथेकारणिनरतोकोईमिलेनही थिलमरणइकांत
रक थिकेमिलीजेइसमीछइ सांभलिनेराजाकह्यो तोदिवाकरतेथिम्हानुंलेचालो म्हेहीदेखांता
हरांराजादिवाकरनुंसाथिले कांतिपुरजाइनरमोहनीदीठी सादिवाकरसराहीतिसमीहीजछे

ताहरांआयराबेसालनुंकह्यो ईथेमोहनीरेराक्षसछे तीथेनुंमारिकाढां ताहरांराजबेसालबेराक्षस
नुंसंग्रामकरि राक्षसनुंमारकाढ्यो असमोहनीआइपगेपडी असकह्योअहोसूरवीरआजपछे
हुंथारीदासीछुं तेमोनुंउपगारकरिमोनलीक्रीधे ताहरांराजाकह्यो जोतेगुणमानीयोछे तोतोनुं
येदिवाकरनुंदीन्ही मोहनीकह्यो महाराजएकवारराजलीकदेखामोवाछेदेओ राजाकह्यो ईये
रीघरथकीराजलोकआवकैजाकैं पछेउजेणीआयसुखपायो पुतलीबोलीराजाभोज इस
मोहदमनहोइतो ईथेसिंहासनलेबेसो इतिसिंहासनबत्तीसीनवमीकथा ९ औरदिनराजाभोज
बोलेसुहूर्त्ते सकलसामग्रतयारकरि चलेमुहूर्त्ते राजाभोजबेसणनुंत्यारहुयो तिवारेदशमीपु
तलीबोली अहोराजाभोजराजावीरविक्रमादित्यसरिषोदयावंतहोइ तोइणेसिंहासणेबेसो भो
जकहीयो किसमोएकदयावंतहुंतो पुतलीकथाकहैछे उजेणीनगरीराजाराज्यकरैछे तेथि
एकजोगीश्वर जंगलमांहितकीयोदेहेछे लोकेआयराजानुंकह्यो महाराजएकमहापुरुष
जोगीश्वरछे सोजिकोआइएछेसोकहेछे इसीसांभलिराजाआपणापुरतीतरामालसमेलीयाप
रीक्षाले लरीतांईजोकहीयोछे इहा किघेरकरइतामिरे रूमाक्षानमर्दन वेठनएणपावंनीया

सिंहासण
२६

लोकमांनलेवंत १ जेदनकांणेवायका वाहिरबुधिगमार जयपिंदेयेसोकहे अंतरनवीविचार २ वि
२६ रत्नासतवादीजगत ज्ञांनीअरूगुणवंत तिणिकारणिनेदीजीये परीक्षाकरीमहंत ३ वार्ता ताहरां
जोगीइणसिराजारामनुव्यनमस्कारकरिवेवा जोगीयरथ्योचेयरवाह जीयेरेरावरंकवरावरि
कोईमिलानपांनलेआवेतेनधाइ दिनतीजेभिव्याआलेसोधाइ एकाकीरहे गलीयांमांहिचीघ
म्यावीरता आलिकंघानुंजगावे अरूकुलसाथरेसोवेवेसे परमेश्वरीवंदगीकरे आवेतेहनु
आवनकहे जावेतेहनुंजावनकहे नवेरेराजासुंकांमन प्रजासुंकांम किणहीरूंवेसुंसोवनहीं
नवेसुंकांमनहीं इसोदेखिराजवुरूषेआइकहीयो दूहा निकारोनोजनकरिइ वीधिवस्त्रपेन राजानुं
करि करिकंथापहिरेसुकरि सोवेधरात्रणसारि १ जेमसुंधिणसंकेनहीं नाकरेकेहरीआसदी
सेअतिआनंदमे वसेसुषीवनवासि २ वार्ता महाराजइसमोमेजोगीदीठो बीजोकुंदीनजा
णं राजाकहयो दूहा येकवुमनवाहेनहीं अरूनाकिणहीसुंप्रीति तत्वविचारेरजिरहे इहस
सुंदरीप्रीति १ जेमननीतरिलोनीया विषईओरविनीति चीतरवाहरिओरसा इहपावंगीप्रीति
२ वार्ता राजावोहइहाकहे जोगीइणसिआयो महादुखजांणिनेनोतकरियाइजागो अरूस २६

रि मयनियमआसनप्राणायाम तीयांरीसमाधिध्यानधारणाअष्टांगजोगअभ्यासकरिकहयो आज
सजीम्हारेमहिलेरहो मासच्यारआवो जंभिजमतिकारिसुं आयसवोल्यो दूहो प्रथ्वीसेजउजाग
नुंज उदणनुंआकास दीपचंदवनितासुमति अगविन्नतहिवास १ दिसासदेलीकरमथर पवन
वीजनाकारि राजारीयरिकसुचे जोगीपावपसारि १ वलेजोगीकहेछे दूहा नित्यअनित्यविचार
णा त्रियाम्हमारेमांनि परममित्रवेराग्यसुं समदमबंधवमांनि १ ध्यांनिसमाधिसहायनी अत्यार
रम्हावांणि मुक्तिसहचरीमाहरे मोहादिकरिपुवाणि २ वार्ता इसरेजोगीकांणीओ राजागुण
धिकहे ताहरांकह्यो म्हारेतोइछाकाईनकृती अरूराजामोपासिआयो सन्नावलकीयोसोनि
फलव्युंजाइ ताहराएकराजानुंफलदीयो अरूंकहीयोफलथेखाइज्यो इयेसुंपहिलीकाया
रोरोगसर्वजास्ये वडीकशरहितनिरोगथास्योएकसोवरसजीवे राजायेफलसिरचढाइलेई प्र
णांमकरिजेआवतां मार्गमांहेएकब्राह्मणमिल्यो पिणरोगेकरिमहादुखीदेखिराजानुंदयाआ
ईतीकेतसोफलजउपाडिब्राह्मणनुंदीधो ब्राह्मणरोरोगगयो सुखीहूवो राजाघरिआयो ताहरां
पवलीकह्यो इसमेद्रयाअवतद्दोइ तोइलेसिंहासणेवेसणजाणो तिसिंहासणवसीसीरीद्रवाणी ६

 अथ [illegible] अनसुईकोवाकिसकलआनिपेकंकरि सिंहासनरैबैसणजागो तिसैइग्या

२० रमीपूतलीबोली राजानोजइयेसिंहासनै सोबैसैबिक्रमादित्यसरिषो धीर्यवंतहुवैसोबैसे

ताहरारानाजोजबोलीयो किसोएकधीर्यहुंतो ताहरापूतलीकथाकहेछे उजेणीनगरी राजा

बिक्रमादित्यराज्यकरे एकसमयइषेडीआश्चर्यकौतुकदेषणरीतांइ एकाएकीराजा प्रधान

तुअरुराजसलोकानुकहि वेसबदलनीसरियो कहीसोछे देषीजैविविधिस्वरित जांणीयेसु

लषविशेषआपपराक्रमजोइये वीमायेतिणविशेष १ वार्ता चरतांविचरतांएकपर्वतरीगु

फा आगेएकहुतीछेवैसंध्यासमेवासोरह्यो तेथिउराजपरिषेषीरहे सोमनुष्यनीपरिबो

ले सोपंषीमांहोमांहिवातकरतांराजासांभलीया सोकहेछे आजहुएतुगयाहुंता तेथिआ

गरदीठोसोकहो एकपंषीकहेछे मोनुंमतपूछो हुंबहुतदुःषीहु ताहरांबीजापंषीयाहव

कपिरवो पंषीकहेछे इहांसमुद्रमांहवीरछेतिहांराजाछे तेहनुराक्षसजागो सोकहेराजा

तुंबीतुंनही ताहरांराक्षसरीबीनतीकीधी कह्योसुद्रीबोमेही राक्षसबोलीयो मनुष्य १

नित्यबजरोतोबुरै जिणहीदिमनदेतिणहीदिनमारुं सोराजाआरीरेवास्तेकिसुनकरे

तथिकारणिराक्षसनुंएकदिनरीमनुष्यारीवारीकरिदीछी सोआजम्हारामित्ररीवारीछे मोनुंदुष

छे किणहीनुंकहीजे गाथा सोकोइनछिसयलो जस्सकहजंतिदीयपयबरकाइंहीयपाजंति

कंठे कंठाउपुलोविलजंति १ मित्रजायपमेइवसहे तुधाजुतजेगुण दाताअणजंतेदिपे उप

गारीबिनबूज २ वार्ता राजाएहवांतसांभलि जोगपावतीजंती सोपंषपहरितीयेदीपेजाइष

बरिलीछी देषेतोवारीवालोजाइनसुंसीषकरेछे असमरणनयदिलगीरहुवेछे दयामलोदी

सेछे ताहरांउथिजाइराजायेकह्यो अरेभाईथांपारेघरिजाइ राक्षसरेवास्तेथारेबदलेजाजा

स उवेकह्योउंकएछे जोपराईवास्तेमरेछे तिवारेराजाकहे इयेवातसुंतोनेकिसुं उघरमां

हिवैसि इतरैकहिराजाराक्षसरीगेजिजायबैठो घडी ४ पछीराक्षसआयो देषेतोसामान्यपुरु

षनही ताहरांपछीसोजुंजएछे राजाकह्यो तोनुंकिसीदहली थारेकार्यकरि राक्षसकह्यो उं

साचकहिजएछे ताहराराजाकह्यो जुंउजेणीरोधणीविक्रमादित्यहुं असपंषीरामुषथीसु

णीसोकही राक्षसबोलीयो हुंतोम्हारामित्ररोमित्र वेतालम्हारोमित्र तीयेरोतुंमित्रहुंथारीमहि

मानीकरिस वोबोमयछे तुंमोपासिवरमांगि राजाकहेबरमांगीयो कोईयेराजानुंबोधि आकुष

केमनुष्यमतदेये राक्षसनुं कह्यो राक्षसकह्यो तथास्तु अरु राजाजोगपायकोचढिवजो ए आयो
सतजीवोजी अहोराजा जोकदइ समो धीरपि सहोइ तोइयेसिंहासनलवेसि इतिसिंहासनलवनीसीरीअव्य
रमीकथा औरदिनराजामुहूर्तदेपिआनिवेकारि सिंहासनवैसनलगुंरुयो तिसेबारमीपुतलीवोली क
कह्योअहोराजा जोकइ ऐसेसिंहासनलेमुवैसे राजाविक्रमादित्यसरिषोउदारहोइ राजाकहे विक्रमादित्य
किसोकउदारकतो तदिपुतलीकहेछेकथा उज्जेणीनगरीराजाविक्रमादित्यराज्यकरैछे तेथिनइसे
मव्यवहारीयोरहे तीयेरेपुरंदरनांमपुत्रसो पिताथीअपरिहोइली जाकरै धनविलसे तिणनुहितकारी
लोकवरजेछे केपुरंदररो इतरोषरचमकरि लक्ष्मीरहीनलेई कांमआवे असमनुष्यकोजोमोटोदीसे
छे सो लक्ष्मीकरि महीतरमिलजैछे सर्वसाथतीनहाथवरावरिछे औरसांभलिकविद्य लक्ष्मीपुत्रीया
इ जयेोकलनिधिरत्नाकरि तीनभुवनपतिनयो घरलिपाईकीस्तनधर लक्ष्मीघरजावइ औ पुत्रतनुस
रसकजलत योमेहीवस्त्रीयेहोइसमरिद्धिजितहितति जिणतलिसमेधनुविणनए लोकसवेनिंदकरे
मतिमांनलाजपुरुषांनसवि याङ्जायेकविदोनवाहि १ इहा निर्गुणनंकहीयेगुणी जोदेवहिधनकोन गु २८
णायनकुंनिर्गुणकहे जोहीनेधनहीण २ वार्ता अरुलोकधनवंतरागुणगावे सोनिर्धनरादोषवषाणे

धनवंतआलसहोइतोनिहच्चलकहे चपलहोइतोउद्यमीकहे मूढहोइतोकहैमितभाषीछे मूर्खनुंक
मावंतकहे इसमावचनहितकारीयासुणिपुरंदरकहैछे इहा गयेजो कनककोडीये आगामीमतिचौ
तवर्त्तमानकालेवरतेहो इनिश्चीति १ आवणहारोजाय हस्तीउदरकपित्थपरि आवतआवहिश्र
यजुंपंणीनालेयरमधि २ सोपुरंदपितारेकमायोद्रव्यसोनीवीयो पाछेपाणनेकुंहीनही ताहरांमन
ईविक्रमांहिवुरोदीसे विनाद्रव्यजारेवमांहिरह्योनजाइ ताहरांविचार इहीकरयो इहा सहितव्यापुग
जवनजलो अरुअसनजलीफलफूल वरयोहरण्गुणसाथरे पिणधनविणजातंवनसुल १ वार्ता
इसोविचारपुरंदरपरदेशगयो तेथिमलआचलपर्वतपासिकोइनगरछे तेथिरात्रेरह्यो सोरात्रेस्त्रीए
ककरुणाकरशेवतीदीठी उवेरेदुवेरात्रिनींदनवधी प्रातनगररालोकसवीया तीयांकह्योम्हेहीनउ
ण आनित्यइयेजातिरोवेइयेरेअरिथमर तोमकोकोइनसुछे तीयेकारणिलोकवजतसंकेछे इसके
ससरजाणिविक्रमादित्यतुंतिलेआयवोतकही इहा एककथावलीयांतणी अरुअस्जारीवात क
हेमीजपावेसही विक्रमदेविख्यात १ राजाजयेमूंमोकदे उवेनुंसाथिलेमलयाचुरगया तेथिव्यालीरा
जालोकालुंदथि हाथेनलेपुरंदरसुंसाथिलेकोथिस्त्रीरोवतीथीतेथिगयो अरुमहाभयकारीराक्षस ॐ

स्त्रि

सिंहासनब स्त्रीनुं मारतो देखिकर्दी यो अरेराक्षस अपराधीनुं बोलि मोनुं संग्राम करि इतरे कहतां राक्षस स्त्रीनुं बोलि
२५ राजा ऊपर आयो संग्राम हीनां खड्ग काढि राक्षसनुं मास्यो तारां स्त्री आसी सदेव कहदी अन्य हो महापुरु
षजी थे मारहरो उपकारो ओ राक्षस मोनुं नित्य मारतो ओ रावरी घर मांहि थी का दिवन मांहे अण मारतो
सो ते बोलाई निर्भय कीन्ही राजा पूछीयो तुं कुण छै स्त्री कह्यो कंवारी रीब्राह्मण कुं परणी तारां मो मांहे
अत्यंत रूप हुंतो अरु मोनुं न छोरहुरि न करतो अत्यंत आसक्त हुंइरह्तो विणकुं किणही वेला मोनुं
न छै तो कुंउवै नै मीनजाती तीथे उपकरि न छोरमरराक्षस हुवो सो मोनुं नित्य मारतो तीथे उपकरि ते मो
नुं छुडाई तो सुं कुं वस्तु उपकार करूं अरु म्हारे संतान छै नहीं तर धन ते हने रायजी के ते वासते म्हारे कुल
रा सात स्वर्णन स्याछै थे अंगीकार करो जंु म्हारो मन संतोष पावे अरु थानै दीजै सो थे लो ताहरां राजा
सो द्रव्य मंगाइ उणरे दरखुं दीयो इसनी कोउ पकार करि उज्जैणी आयो सूतजी कहे राजा भोज इसनो उदार हो स
इतो ईये सिंहासनलैवै सो इति सिंहासन बत्तीसीरी बारमी कथा अरे दिन राजा भोज सकल सामग्री
निपेक करिवे सण तुं कह्यो इतरे तेरमी रत्नवती बोली ईये सिंहासन ऐसो वैसे जो राजा विक्रमादित्य सरिखो २५
उदार विक्रम होइ तो इस सिंहासन ऐवे सो राजा भोज कह्यो कि सो कउदार विक्रम हुंतो सो कथा कहे छै उजे

णीनगरी तिहां विक्रमादित्य राजा एक समय पृथ्वी देखने कौतुक देखण नगरी नी सरितो रगुफा रा सिं
यो तिहां नदी सानर मती रे तीरे एक देहरो छै अरु पंडित वेदवाद करे छै राजा ऊण उठि गयो तेह
यो मे पंडित कह्यो छे सो तिहां मिथ्या शास्त्र रो वाद सुणि राजा बोल्यो अहो पंडित मिथ्या शास्त्र रो वा
द सुणि आपणी बुद्धि करि अर्थ पुछ्या इके अरु धर्म सो नारी व्यभिचार वाल्मीके पढ्या किणही
रो न कीजै अरु शास्त्र सुणि विचार करै नहीं सो तत्व किसुं जाणै जैसे कोई कांबी केरे कही ये वा
ख्यान करे तो मन्ये पुराण कुमी स्वरो विचार विणकुं पाईजै तुं मूर्ख लोक विचार विना विगम्या ।
जो कि णही कपटा जने मार्ग दिखायो तो ही विषकंटक सर्प हिंस्रका दिक हिंसुं देख हाजलो संसा
रसों न विचार करणो साव पुरुष रो निर्णय करो एथि ओ विचार अज्ञान कशास्त्र कुस्मृतिक
मार्ग परिहरणो पशवादन करणो बुद्धि केवल तो व थे बुद्धिवंत आकाशथी नपमे छै विचार करतां
मन निश्चल रहै तब बुद्धि पसरै ऐसी सुणि पंडित विस्मय हो इरह्या अरक ह्यो अहो या वाणी
सिंघ अर्थ सार व्यात स्व स्वतीके मुख हुंती इये समे एक मनुष्य नदी मांहे वेहतो हुंतो अरु नदी पुर आइ त
३१ रां वहि यो ल्यो यह तो पुकार्यो अहो लोको दया करि म्हानुं नदी मांहि थी कढो सु करता पंडि

ततोनिर्दय पिल्वीकोमरणरैभयनैमोनजाये ताहरांराजाडांणीयो गाथा विरलाजाणंतिगुणा विरला
र्लंतिनिद्धणानेहा विरलापरकज्जाकरा परदुरकीदुरकियाविरला १ वार्त्ता ताहरांदयारोसमुद्र
पणि परदुषकाटणहार विक्रमादित्यउवि नदीराप्रवाहमांहिस्त्रीपुरुषवहिजाताकाढीबाहिरका
ढ्या ताहरांपुरुषवोल्यो अरेहोसाधुरिसतेहीजाल्यो गाथा करचल्लभयाणेणवि अवसरदिन्नेणगु
णेउडियए पच्चामुआणसुंदरि घनसयदिन्नेणकिंकज्जा १ वार्त्ता उवैकहीयोकुंयिणकारणहोउं
नीयेकारणितोनुंएकजामीहंछुंसोहंल्ये ईयैजमीसुंताबासुंसोनोहोइ जमीदेयेनैपमीये राजाव
रित्रदेपिउजीणीआवतांथका एकमहादरिद्री अरुमोटेकुलजनमनो तीयेनुंदेषिउवैजमीसेतीएक
मणि सोनोकरिदीधो असजमीपिणदीधी पाछेराजानीदेउजीणीआया राजानोजइसमोउदारचित्तहो
इतोईयेसिंहासलेवै सोजुसिंहासणवत्तीसीरीतेरमीकथा १३ श्रीरसुलक्षसिकजअनिषेकरि
णा मगीतयास्करिवैसणलंजयो तितरैववदमीपूतली राजानोजइसनोदातारहोइ तेपवैसिंहासण
लेवैसिजे भोजकहैकिसोएकदातारहुतो सोपूतलीकथाकहैछै उजैणीनगरी राजाविक्रमादीतराज्य
५ करैछै राजारोइसोपणरूष्टमिएकवारपवरलेणी लोआपविचारतो अपथाइतमोकलतो एकसम

यथ्याणकरतोराजादेसांतरगयो तेथिजंगलमांहेनमतोएकदेहरीदीवो तेथिएकसिद्धपुरुषदेषिनम
स्कारकीयो उवैकह्योअहोविक्रमादित्यतुंएथिकाज्ञ राजा कहैतेमोनुंकुपिछाणीयो तिणेकह्योकुंद
हिवीउजेणआयीछो ताहरामहाराजवुंदीठाकुंला तोथेराज्यबोभिकरपरिनमणकरो राजारूयीया
रलकलनेराघीकै कह्योछे राज्यंचिंतानरंग्रस्त राज्यंवैरनिबंधनं आविभ्मासपदंराज्यं तेनकुःखनयंसं
दा १ राजाकह्योयो इहा जोकवकुंनावीसलो होतोक्युंहिरत्राज्ञ तोडरकनहोतनलरायकुं रामसुं
यष्टिरराज्य २ हकधारीजैज्ञानछीयोविचारतरंगवक्र अन्यजन्मकृतकान कर्मविपाकोपाइयै ब
वार्त्ता तीयेकारणिमोनुंकिसीराज्यचिंता अरुआगेकिणहीरैराज्यईयैकारणिगयोछे ताहरांसिद्ध
पुरुषवोलीयो सोनलियपानीबंधउरनमए तिहांआयबोघरराजा सोमासखमासदेसमांविचरतो
राज्यबोमिदेतो तिवारैएकसमयगोत्रियांमिलिराज्यलीयो अरुराजाआयोतिवारै राजानुंविरस्क
रकरिकाढीरांणीनुंपिणकाढ्यो यारैउवदेपणोहोइतौराजारैसाथेजा नदीतरजोपांकरि रांणीक
स्यौकुंम्हारैषणीसाथिजाइस ताहराराजारांणीपालाविचरताथका एकरात्रिपाकलीपुरनगरसुंनै
मोदीएकरहतीयेनीचेसूता तीयेरजमांदिधयरुजाला सोवैवावालकरैछै राजातलैवैठोसाम्न

सिंहासण लेहे उवेकहैछै ऊनगरीरैराजाभोजरात्रिमस्ती। अपुत्रीयोछै तिवारेवीजेयध्येरहीयो तोराज्यऊम
३१ करिसी यककद्यो एकनीदेसतोछै तेकरिसी ताहरा राजायक्रारीवातसांनलिप्रनातेऊविस्त्रीसहित
परलीपुरगयो तेथिराजामनू भोछै अमांनेमिलियंवृदियोकरिइयेनुराज्यदीधो सोराजारांणीनिःकं
टकराज्यकरेछै तिणसमेसीमाजनत्रयालउमरावेमिलिकह्यो ऊणकालेकोइछै औरराजलाइकहो
इनहोइ उवेसीमालीराजावलिआवणलागा तिवारेराजारांणीसारपासेरमतांराणीयेकह्यो जेम
हाराजयएवक्रआवेछै राज्यजास्ये थेराज्यचिंतानकरोछो तिवारेराजायेश्लोककह्यो सवटःपंचलेय
काःदर्दंतिवदरंतिच: अक्रान्तपात्नयःकर्ज्यंलि यज्ञाव्यंतश्चव्यनि १ अर्थः प्रियातुंपासोढालिचिंताम
करितलवनहेविपंचयकामिलिराजदीयोछै तिकेवीजाऊलेस्येतोजोरनछै तोजेकांईनावीजस्येते
जस्ये श्लोकः तन्नवसियन्नवाव्य नवातिवनाव्यविनाथियन्नेन करतलगतिमपिनस्यंति यस्यक्न
वितव्यतानास्ति १ वासां ताहराराणीयकारेदीयो सांनलिनिश्चंतहूई इतरामांहिसीमालन्नपाल
कोजलेआया तिवारेकोटिमांहिथीयकारेप्रनावथीचित्रामांरीफोजमांहिऊंती तीयेसंग्रामकीयो
असयेलागा इसीभांतिसांनरांणीनुचमत्कारहुयो ताहरांराजाएवीयो किसुंओ ताहरांपन्वेयका ३१

प्रत्यक्षऊइवोलीया सांनलोमेहेरदेवतान्नपांवेमाहलाऊता तीयानुंग्रीष्मरितुसमइथे उछेपांणीमेत
रफमता काढिइयेकंनारेकउतपांणीमेघाल्या पछे केताएकसमीयेचितीतहुया जेनारंगीजीवरा
जाहुयो मेहमछोनाजीवयहांहुया मेहरसनवरेउपगारमांनिइयेनुराज्यदीयो असुसांप्रतिरक्षा
कीधी तुंकहियदाआपणीछोमगया इसीकथासंबंधसुणाइ उणसिद्धपुरुषेराजाविक्रमादित्यनुं चिं
तामणिनामरत्नमनोवांछितदेणहार इसमोछे सोवदेदिदाकीयो असतरतकाइराजभोगकरे उवे
रेकह्योराजाउरतअसवारहोइउजेणीआवतां मारगमांहेदरिद्रीआरयावकआइराजानुंजाव्यो राजा
नुंतोविरुदक्षिकोयेछियावे असयपछिजेकोईवस्तुहोइ तेछितिकातीयेनुंदेणी ताहरांराजादरिद्रीया
वकनुंचिंतामणिरतनउठाइदीयो पाछेउजेणीआयो पुतलीबोली राजाभोजइसमोउदारचित्तहोइतौ
इयेसिंहासणबैसो इतिसिंहासणबैसो इतिसिंहासणबत्रीसीरीवातरमोकथा ४ वलेराजाभोजअपोर
स सुहूर्तसिंघासणबैसणजाणो तिसेदूजरमीपुतलीबोली अहोराजाजिणरेविक्रमादित्यसरिषोउदारचि
त्तहोइतोइयेसिंहासणबैसो राजाकहीयेविक्रमादित्यकिसोएकउदारहूंतो तिवारेपुतलीकथाकहेछै उ
जेणीनगरीराजाविक्रमादित्यराज्यकरे तिथेरेसुमित्रनांमिनसोअत्यंतरूपवंत सोअनेकतीर्थरीयात्रा

करणरी तांई हाल्यो तठै रिकरतौ वक्रौ तीर्थ गयौ तेथि श्री भागवत पंचम स्कंध मांहे कह्यौ छै जो सुरअ
सुरनरनायक रा मस्तक रूपी या पुहप मंजरी करि सो नाय मांनछै चरणकमल जीयरा छै एहवा श्री आ
दिदेव तेहनी यशो नामरूजा करि स्तुति करतो हुवो इहा श्री जगवंत करि नाव सकै जेहुय देकमनि तै
लोकय हि छे राव इहलपरत संसयनही १ आदिदेव सुणि नांम जो धारै नीतरही औ सोसारे सहि कांम
पवित्र करै मन आतमा २ नारायणन निथेह परदक्षिणा दे तिलक करि जनाआरति येह धनजोदी
जावे चमर ३ निराकार पणि तेह तेह जि आकारी जन्न नजे जुनावक रे ह जुगति मुगति वंछित लहै
४ भाउ का पया पाणमूद प्रतिमा जो पूजंति तीयां घरे लखमी अवल आयुर्वल अप्रतिजंति ५ वार्त्ता इ
सी भांति स्तुति करि तीर्थयात्रा करि इ व्यवहरि स्नानदांन करता कोईक नगर मनोहर देखि वो हुंते ग
यौ तेथि एकक टाहतै जनरी थो देखि लोकानुं पूछ्यौ ताहरां लोके कह्यौ इथैनगर मांहि मदनसुंदरी
देवांगना छै तीयेरै प्रतिज्ञा छै जो ईयैकमा दे मांहि स्नांन करिनी सरै सो म्हारो भरतार होइ सो इणकुम
इमांहि कुण आवणी काया होमे इसी वात सुणि सुमित्र जाइ देवांगना दीठी ताहरां सुमित्र विमो हितह्यौ
पिणसीके कुंडीनही मन पाछौ ले घर आयौ अरु राजा सुंमिलि मदनसुंदरी रो सर्व वृतांत कह्यौ

सो राजा वात सुणि कौतक मिसि सुमित्र नुं साथि लेते थि जाइ कमा लकक उतौ दीठौ अरु मदनसुंदरी दे
दीठी तीयेराजा पिणमो ह्यौ अरु सुमित्र रो परण अनुराग देखि ऊकक ताक माहमा हे कूद पड्यौ लोक
हाहि रकरण लागा अरु उ तरत मदनसुंदरी आइ राजाने मांसपिंम सारि खौ परियक ह्यौ देखि अमृ
तरी धार सुं सींचीयो ताहरां राजा सवायौ रूप लेऊ ठीयो अरु मदनसुंदरी बोली अरु जगत आधारतु
रूपपरी स्यारी तांई मैइ तरो आरंभ कीयो सो पारी क्षा लीधी इतरो करि हिवै प्रमांन होइ आपणी राजधारा
णी दीधी अरु राजा अंगीकार कीयो नही ताहरां वले कह्यौ इहा त्रियाव चनालण न लागा हीयै
मनपकृता वो न की जीयै अतहि विषयरस जोन जोनन कीनो धनर कलिमे ताकी जीयो तेधी रिस
करि त्रिभुवन कीता प्रथ्वीतल मै हय याव दीता १ वार्त्ता ताहरा मदनसुंदरी ने राजा धांनी ले जाय सुमि
त्र नुं दीधी अरु आप उज्जेणी आयो तीये काल कह्यौ राजा भोज इसमो उदार होइ तो इये सिंहा
सणे बैसि इति सिंहासण बत्रीसीरी पनरमी कथा १५ वले राजा भोज आगो रमुहूर्त्त अभिषेक करि सिं
हासनुं बैसनुं हुयो तिसे सोलमी पूतली बोली राजा भोज इये सिंहासणे तो बैसो राजा वीर विक्रमा
दित्य [illegible] विक्रम किसमो एक हुंतो सो पूतली कथा कहे छै उज्जेणी

सिंहासण नगरी राजा विक्रमादित्य राज्य करै एक समै चतुरंगिणी सेना सजि साथ करि चिहुं दिसि जीत सर्व राजा
३२ नवसि करि अरु सकल पृथ्वी रो तत्वसार वस्त नै ल्याइ और जन जनता मनुष्य आश्रय आराधकर
राजाण इसै समइ थे राजा स नामां देवै छै ते समै वन बाग रो रखवालो पुरुष हुं तो ती थे आय राजा
नुं सावधान कीया महाराज वसंत आय प्रापत हुवो और आपणी सकल राजधानी साथि लीयां छै
सोंन लि राजा आपणा सर्व परिग्रह साथ करि वन बाग क्रीडा करण हालो तीये क्रीडा रास सुख करि के
लि रा वन मांहे आये अरु उछि केलि रा वन मांहे पांना रो मंडप रचीयो उछि सोना रा सिंहासण ऊप
रि राजा बैठो और सर्व आपणी अठोतर हैठा रजपूत ठाकुर पंडित कवीश्वर प्रधान पुरुष वात फरोस
४ वतराई लीयां और समै आयां मीठा वचन चो पहास्य करै छै कवि गोष्टि गीत गोष्टि रा सुख अनुभवै छै ए
ता विचालै एक मनुष्य धर्माधिकारी रूप वोलीयो वोल्यो महाराजा साम लो इहा कारी ग र संसार हुं
राज्य विन वसुलपाइ धर्म की मोऊं एलनर तिलै कुन साख्यो आइ १ वार्ता राजा कयो धर्म अधिका
री और कहो इहा संसारे अति नय मरण डुनिवारणी व्याधि कर्म चूमि पाइयै कहो एह हां मन मनस
शि २ वार्ता वलै राजा कहै और कहो धर्माधिकारी कहै छै इहा विषय वोर सु सिद्धा हि गे प्रिय संजोग ३२
लहि कांहि वोकं लगे सुणि और सुं वलसी मनपद नाहि ३ वार्ता ना हरा वलै राजा कह्यो कांहि धर्माधिकारी
कह्यो इहा जोवन क्षा ते कोंणीयो आयु देयं ता जाहि गयो दिनकदकुंनवाकुम ने लिख मी धिरनरहाइ ध
वी जल चमक सो जीवलो थल थरिडालसुं डेम और मन ने सुख सुपन सो तीहरिन नहीं थे कै मध वलै धर्मा
धिकारी कह्यो मन थे थे कुल साव सो यथा शक्ति करै दान आपापरल विद रिजै तो कौन गृहस्थ समा
न ६ वार्ता एती धर्म वार्ता सुणि राजा संतुष्ट मांन हो इ धर्माधिकारी नुं आव कीमि तस्यी या दीधा अरु सोल
ह मांसण दीक्षा अनै वन विहार करि घरि आया पूतली वोली अहो राजा जो इसर्सो उदार चित होइ
तो इथे सिंहासण लेवै सो १५ इति सिंहासण बत्तीसी री सोलमी कथा १६ फेर ओर मुहूर्त्त अभिषेक साम
ग्री सकल विधि संयुक्त करिवे लागो इतरै समै सतरमी पूतली वोली राजा जो ऊइ थे सिंहासण ले सो
वैसे जो विक्रमादित्य सरिखो परोपकारी हुवै राजा कहीयो किसो एक परोपकारी हुतो पूतली कथा क
है छै उजेणी नगरी विक्रमादित्य राजा राज्य करै छै ते छि एक समै नारद देशांतर थी आइ राजा नुं जस
नेदिदे मिलीयो राजा पूछीयो कांइ आयो नारद कह्यो चंद्रपुरी नगरी हुंती आयो ते छि चंद्र शेखर रीस
नामां देवता थारो गुण पढीयो इहा मुंह मांग्यो हुंती अधिक दीयै दांन अरु मांन विक्रम पुरुष गारी

सिंहासन यो कलिकल्पद्रुमजांणि १ एतीसुणिचंद्रशेखरबोलीयो अहोनहइसमोवीकोहीकोईराजाछै नहबो
लीयो इहा जेतीनुंइरविरथफिरे [illegible] औरसमुद्रअंत तेतीनुंअअनरिणकरी तीयो
३४ म विक्रमऋणसंति १वार्त्ता इतीसुणिचंद्रशेखरविलषोहुयो तेषिकहीयोछे इहा गुणहीगुणजाणि
न्ये करेगुणीहीदेषि गुणरसिनेगुणी सरलविरलकुंदेषि १वार्त्ता चंद्रशेखरराजाविक्रमादि
त्यसुंअहकिरिदेवताआराधनकरणलागो तिवारैकितरेककालआराधनकरतांदेवताप्रसन्न
हुयोकह्यो थारेअत्यंतसंपदाहोसी तीयेकरितुंदानभोगमोकलाकरि असप्रत्यक्षहोइकह्यो
तमोआगेअग्निकुंमकरिनित्यथारोशरीरवलिहे जुंथारेनवतनशरीरआवसी मुहमांगीसंप
तिआवसी तापछेचंद्रशेखरआपणोशरीरनित्यगंकलहे नवतनसरीरपाइ अत्यंतसंपतिलहे 57
दानादिकरैछे औहसांतनहरामुषथीसांभलि राजाविक्रमादीतचितातुरहुओ जोमोविद्यमान
थकांदीजोदुखपावे धिक्कारमोनु म्हारोजीवीयोधिक्कार इसोविचाररोजोगयापवमीपदिरचंद्रपु
रआयो अग्निकुंमदेषिकह्यो इहा अबंरफलनाजवे षेतीकरेनमेह विद्यावजधनसाधिके ३४
परउपगारसनेह १वार्त्ता सावासचंद्रशेखरनुंइसमोकष्टकरिदानकरे अनेदीगेजुईयेकुंम

माहेचंद्रशेखरनुंवमोकष्ट तोआजपरोपकाररोअवसरछे इसोविचारनिर्लज्जथकोपरोपकार
निमित्तअग्निकुंनमाहेपमीयो ताहरांदेवताप्रत्यक्षहोइबोलीयो अहोसत्वाधिकउतावलोहो
इकायाहोमे सोथारेकिसोकार्यछे जुंतोअवरसंतुष्टहुयो कार्यकहि राजानवतनसरीरहोइबो
लीयो मोनुंवाचादेजुंकुंमांगु ताहरांराजाबोलीयो जोचंद्रशेखररोनित्यअग्निप्रवेशनिवारि
अरुमुहमांगीसंपतिद्यो देवताचंद्रशेखरनुदेणलागो ताहरांराजापवमीपदिरउजीणआयो त
घलोकेस्तुतिकरी इहा परनुंजाणेआपणो वेगिकरेउपगार आपहोइदेवेगतो इत्युपकार
विचार १येसेअग्निकुंनमे देवतणोवरपाइ चंद्रशेखरनुंदीयो तोविक्रमसोऋणराइ १वार्त्ता
इणेवासतेविक्रमरायसरिषोहोइसोइणसिंहासणेवैसो इतिसिंहासनबत्तीसीरीसतरमीक
था १७ अवाआगेफेरओरमुहूर्त्तदेषि अभिषेककरिसिंहासणेवैसणलागो तिमेअढारमी
पुतलीबोली अहोराजाजोइयेसिंहासणेसोवैसे राजाविक्रमादित्यसरिषोउदारहोइसोवै
सै राजाभोजकहे किसमोएकउदारहुतो पुतलीकथाकहेछे उजेणीनगरी राजाविक्रमादि
त्यराजा एकदिनजीतरिलीसभायेवेठो पोलीयेआइकह्यो कोईकपरदेशीपुरुषबाहिरछ

सिंहासण
३५

नीथे राजा रा पाव देख्या चाहे छै तारां राजा नीतर ते डिगडीयो कोइक अवरिजरी वात कहि सो कहे छै
महाराज उदयाचल पर्वत ऊपरि एक स्वलिकानां मनुवन छै तीयेरे कनारै त्रकांतिशिला वडमहासरोव
र छै तीयै वीचि एक सोनारो थंभ छै तीयै ऊपरि सोनारो सिंहासण छै सो थंभ सूर्योदय समे पांणी सुं बाहिर आ
वे उगवरतां इवधइ पाछै घटती २ संध्या समे पांणी मांहि जावे इ सो अवरिज छै उवे राजी कउ वेनुं पांण वि
नाशनतीर्थ कहे छै इसरी वात सुणि उवेनुं इनां मरोरी जगार देजोग पावमी पदिर उदयाचल गयो अरु प
पविनाशनतीर्थ दीठो जाइ राजा तस मे पांणी मांहि घ्यो थंभनी सिरयो तारां इलवे २ पांणी ऊपरि तो २ जाइ तर
सिंघासण वेठो पाछै थंभ सिंघासण लीयां वधतौ २ उग्रहरतांई सूर्य मंडलनुं जाइ धुकतो सूर्य स्तुति क
रतो पांणी थे करीनै अरु सूर्य रा ताप सेती मूर्छित हुवो तारां मन मे स्तुति करण लागो सूर्य देवता सा
हस देखि संतुष्ट हुओ अमृत सी चित सचेत कीधो तारां वले स्तुति करण लागो हस्त जीयै हंसरी
किरण हरिकरण अंधकार नित्य प्रकृति डेरी इसी जाणि जगत आधार १ किरणन पंचे आवणी दि
इजर क विचार जसु देषे एतानसे उड़ेचो र असुकार २ कालांतरिदी थे सजा न्हीं नहीं मनाइ तै चेतन ३५
नन्यौ तनुं प्रणमुं नित्य प्रियाइ ३ ज्ञान कर्म सहु इंद्रिया मनो बुद्धि अहंकार अंतर वृत्ति एरसी वा

हिर प्रतिघातिकार ४ जगत आधार सर्वे करै गुण सत रज तम जोइ त्रूवप्रकृति विकार तवि विध देषा
के दस जोइ ५ वार्ता इसी स्तुति सुणि प्रसन्न होइ बोलीयो तारां सूर्य संतुष्ट होइ एक कंचन जारी होनी दी
धी अरु कहीयो सवा भार सोनो नित्य कमसी इसो सुणि सवा भार सोनारो देणहार कंचन ले थंभ ऊ
परि ले सिंहासण बेठो थको तीयेही प्रकार दिन अस्त होतां थकां पाछिली तरै जाइ उणी सुं जलरि पांणी
मांहि तर बाहिर आयो आवतां थके निढ़ाक दोइ पंवासनमा लसरा मइतव स्त्रही णतीया मांगीयो
तारां राजा विचारीयो आज जंदे इसकां धक सवारे कांण देसी तो इयानुं इ समो दीजै जुं आजनम
ताइ निश्चंत रहे इसो विचार दोनुं कंचन कलका हि सवा भार सोनो दीयो अरु कंचन जनी दीक्षा अरु उवं
रो आसीर्वाद ले उज्जेणी आयो इसमो उदार होइ तो इये सिंहासण बेसे सो इति श्री सिंहासण बत्ती
सीरी अठारमी कथा १८ और सु हुते सकल सामग्री तयार करि सिंहासण बेसणनुं हुयो तिव
रे उगणीसमी पूतली बोली राजा नो जइ ये सिंहासण ते तिको बेसे जिको राजा विक्रमादित्य सरि
सो उदार होइ सोइ ये सिंहासण बेसे सो जो जे कहै किसमो एक उदार चित्त हुतो तव पूतली क
था कहे छै उज्जेणी नगरी राजा विक्रमादित्य राज्य करै छै तीयेरे राज अवारी थु रूपवति प्रत्ता स्त्री

सिंहासण आयुर्बलजीवनी प्रकारका सदा करै वाहीजातामें घ्रवरसै यापरोनय धर्मरो विस्वास अतिथिरी स
३६ जायुसरी सेवा परमात्मा चिंतन पात्रनुं दान राजनीतिव्यवहार एकसमे राजा राजसभामांहे बैठी
सेराजकुली वैठीछे अनेक्रीडावनमांहे षेलतो रषवाले आइकह्यो महाराज एककालसरूपीसू
करकवाकुंतीकवाहीथी आजवहारोवन अवगाह्योछे यावात राजासुणि असवारीकरिवनमां
हिगयो तेथि सूकरनुं विणास करतो देषि राजाकोपमांनहो इवांसे घोमोदीयो सो सूकरवनबंधमा
घि लांबू जीवरी प्रकाराल्यो केथिही गयो विलजवैरवांसे लागोगयो तेथि पर्वतनें संधिमांहियो लिघ
गुंजणीछे छिनकी घुलीछे ताहरां राजा कौतकदेषणतांई घोमाथी ऊतरिमांहि जायपोलिपोलि घो
नोमाहिले घोनोतिहांराषि आप्रोजाइतो महाअंधकार दीसे तिणेहीसेकुंहीनहीं ताहरांही यारी
आटकलिसेती टंटोलतो २ विवरमेजातस्यो चालतां २ आगेजाइ देषे तो एकनगर अतिमनोहरछे जे
रो थिमेमी क्वचेमीमालीयारावटीजषासनषण आवास सोनाराकलससेती विराजमान नांतिरवणे
सुंधीतरियाघरदेषि आश्चर्यजइरह्यो पछेनगरमांहि प्रवेसकरि राजद्वारगयो तेथि महास्यामध्वा ३६
रपालदेषिवोलव्यो जेसुणीजतोवलिराजा पातलछे अरुश्रीरुघ्र्धारपालछे सो सांचलो अरजला

श्रोदीसैछे ताहरांछेतुं जुहार करि आपणां तिनी तरि गयो तेथि बलिराजा तीथेविस्वनाथनुं हाथ
नमावीयो अरु दानदेस्क म्हारं पालराषीयो सो श्रीराजा वलितीथेरीनगर तिवारे विक्रमादित्य अ
न्यतरजाइ रम्हानुं सिंहासणवेठोदेषि षेकदेजणामकरिकर्नोरह्यो ताहरांवलिराजा बोल्यो
राजा विक्रमादित्य भलौं आयो अरु आपणावाकारलुकह्यो महिलेमांहिलेजाइ इणरीम
हिमांनी करी ताहरां राजारी महिमांनी करि अरु विक्रमादित्यनुं दोइवस्त दीन्हां एकरस २रस
यण२ दोइवस्त देसेवक साथिलेअंधकार महारतनदीवसेती वाहिर पहुचायविदाकीयो ति
णसमे मार्गमांहे एकब्राह्मण पुत्रसहित आयप्रार्थना कीधी अनेराजा जिहांयाचक मिले ति
हांकेवस्तदाजरिजुदेतिकाह्ये तिवारे राजायेब्राह्मण आगे दोनुंवस्तमुंकि प्रभावकहे रसाय
सेतीदेहनीपुष्ट आरोग्यरहे अरुरससेती लोहकोटिसुवर्णकरे तिवारे ब्राह्मणबूढो होतोति
कोतोऊंणे रसायणलीजे अनेपुत्र कहेजीयेसां सोनोऊंवे सोलीजे ताहरांराजा दोनुं वि
ववाद सांनलिद्याकरिकह्यो थेमांहोमांहि क्युं फगमो रस २रसायण २ए दोनुंल्यो एदोनुं। १८
ल्यो एतो कहिदोनुंवस्त दीन्हां आपउजीण आयो तीये कारणिकहुंछुं राजाइ समोउदारहि

सिंहासण सदोइ तोइऐ सिंहासणै बैसि इति सिंहासण बत्तीसीरी ३ गुणतीसमी कथा २९ फिर राजा दूसरै
३१ मुहूर्ते अभिषेक करि सिंहासण बैसण नुं हूयौ तितै तीसमी पूतली बोली अहो राजा जो जा
इयै सिंहासणै सो बैसै जो राजा विक्रमादित्य सारिखो उदार चित्त हुवै तो इयै सिंहासणै बैसो रा
जा नो जक कह्यो विक्रमकिसो कउदार चित्त हुतौ पूतली कथा कहे छै उज्जेणी नगरी राजा वि
क्रमादित्य राज्य करै छै सो एक समै कौतुक देषणरी तांई देशांतर गयो हुंतौ ते थिपदमपुर ना
गरै कनारै देवालय देषतै छिगयो ताहरां आगै देवालय वापनी सो मांहो मांहि वात करतां सं
भलि जमैर ह्यो कापमी कहे छै न्हेतीरथ अनेक कीधा थावर जंगम दीठा पिण कनक पर्वत
ऊपर त्रिकाल नाम नाथ जोगी रहै छै तीयै रे दर्शन नुं घणुं हीमन हूओ पिण लोकी कह्यो महा
विषम मार्ग छै कोई जाइ सकै नहीं ताहरां मर ता न गया पिण वृमो महादुरलभ छै पिण मार्ग रै न
ये दर्शन न कीयो हवा आपद निमित्त धन राषीयै धन करि रहै कलत्र दोनुं करि सुत राषीयै त्रि
हुंकरि आत्म विचित्र १ फेरि कुवै धन असतिया होत्र पुत्र धन होइ श्रेयस वे फिर रुजावै पिण ३१
व कुन शरीर न होइ २ कार्य नहीं व मौ असफल न ही सरण हो इन होइ परस्व कुतन्नाप लग अ

सक सो आरंभ न कोइ ३ एती बात सुणि राजा विचारयो अहो नारकिसुं समरथ नुं किसुं इरव्यव
साय किसो विदेश सुविश नुं किसुं प्रियवादपराइ १ वार्त्ता राजा कहीयो इयै आपणी कही जोए
३ असमर्थ हुंतो सैंधिबुं तो क्युं न जाउं ताहरां राजा जोगपर्वकी पहिरतै छिगयो देषै जोगी पद्मास तो
न दृष्टि बैठो छै अरु यंतरो प्राणायाम करै छै एमीया सुंगुदायी मिनेत्र मीचि सुषमणा राविवर मांहे प्रा
ण रो प्रवेश करि ध्यांन समाधि मांहि समरस नै प्राप्त हूओ छै सो धन्य छै एतो कहि राजा मौन करि रह्यो छै
पाछै कीतली कवेला कई जोगी नेत्र उघाडि बोलीयो अहो कलिकाल दानेश्वर तुं ए छि क्युं आयो
राजा कह्यो थाहारा दर्शनरी तांई सो दर्शन कीयो जन्म सफल कीयो राजा इहीक ह्यो विधिरं पथा
विचरतो दीवा योग वियोग ऊउपसमलीयै रह्या तो सफल न यो संजोग २ वार्त्ता इतो सुणि जो
गी संतुष्ट होइ एक कंथा एक षमी एक दंड एतीन वस्तु कदे अरु तिणे रोप्रभाव कह्यो षमी सेती
सेना आलषै दंन करि सयशी सेना सजीव होइ अरु कद्देसो कार्य करै वांमहाय सेती दंन करि
स्यशी कीयां सेना विलै जाइ अरु कंथा सुं धन धान्य वस्त्र आभरण जिकुं मांगै सो दे ताहरां बे जोग
पासै आग्या मांगि उज्जेणी नुं हाल्यो विचिदेषे तो एक पुरुष वृहिस्वी छै आम्र वृक्ष मांहि प्रवेश २८

सिंहासण० सुणरीताई तइ आरह्नवोछे राजा कह्यो अहो तं कि सु करै छै उपुरुष कहै इहो उपनवे छै पार को
३८ नीनकुण समरत्न उपसांनलि उबीयो नकुंवे को एक है अपतत्त्व १ वार्त्ता एतो कहि वलेवो लयो
सांनलि म्हारो राज्य वैरीये ओरव्यरयो सिलीयो असमीवत तेठ वानुं मारि राज्य लीयो नजाये
अरु दुर्जन राज्य करै सो दीठो जाइ नहीं तयि कारणि काठ मांहे वलि मरिस तिवारे राजा उण
राजपुत्र नो उणरी ताई जसरा उणरी तांई उवे तीनेव स्तउण पुरुषनुं दीन्हो अरु आप साथ्ये हो
इ उसमण हरि किरि राज्य दिवायो पछे उज्जेणी आयो तीयेकारणि कहुं इसमीउदार होइ तै
इयै सिंहासणे वैसि इति श्री सिंहासण बत्तीसीरी समी कथा वले श्रीरमुहूर्त्ते राजा भोज सिं
हासण वैसण लुं ह्यो तिसे इकवीसमी पूतली बोली राजा भोज को विक्रमादित्य सरिषो उ
दारमन होइ सो इणे सिंहासणे वैसे भोजे कह्यो कि समीउदार मन हुतो तदि पूतली कथा क
हे छै उज्जेणी नगरी राजा विक्रमादित्य राज्य करै तीयेरे बुद्धिसार मंत्री मंत्रीरे बुद्धिशेषर पुत्र
परं महामूर्ख तीयेनुं उरी पढे छै जो मांह राकुल मांहे तो सारो सो मूर्ख न हुवो जे उंन पढे इहा वि ३८
द्यारूप मनुष्य कुं अरु विद्याधन गुप्त विद्या वंत सुष नो गवे जसु विद्या सुख सुत १ विद्या गुरु

ना

भोरांतलो विद्या नाई बंधु विद्या परदेसे सुहृद विद्या विणस कां पंथ २ विद्या मोटो देवता विद्या राजस
जाइ विद्या विण जे मानवी पसु समान कहवाय ३ वार्त्ता इसमी पिता रा मुषथी सीष सांनलि विद्या
पढणरी तांई देसांतर गयो तेथि विद्या पढि उज्जेणी आवतो एक नगर पासि देवालय कं तो तेथि रा
त्रि रहीयो अर्द्ध रात्रि जाई तिणसमे तलाव मांहि थी आवक न्यानी कली तिके देहरै आइ युगादिदेव
री स्तुति करि नाटक करिवा लो ताहरां बुद्धिशेषर नुं कह्यो उंही आव बुद्धिशेषर देवांगना साथि ग
यो आरो काहालय मांन सरोवर दे षिमर तो वादि रुक नोर ह्यो देवांगना तो तलाव मांहि गई इसमै
आश्चर्य बुद्धिशेषर नुं आइ कह्यो राजा सुणि जो गी पहिर कया लदेषण नुं गयो तेथि अर्द्ध रात्रि दे वं
गना आइ स्तुति करि प्रतिष्ठा करि नाटक करिहा ली ताहरां राजा पिण कह्यो तुं पिण आव ताहरां
राजा साथि गयो देवांगत लाव मांहि पैसि गई तीयरै साथि राजा पिण गयो भीतरि आयो राजा
नुं देषि देवांगना कह्यो न लो हो सत्पुरुष म्हारि नायै आयो तो तुं दे षि म्हारो नगर महल माली य
अरु म्हारो राज्य करि हाथ गहि करम्हासुं सुष भोगवि एतो सांभली आय नेही यो राजा कहीयो
थे कुण छो उवां कहीयो म्हे अष्ट महासिद्धि छां अरु श्री म्हांरै जो मारो पतालछै ते मांहे नगर छै

सिंहासण सोउन्हरिदर्शनकरिवालायकङ्गवा अवन्तानुंअंगीकारकरी ताहराराजाकहीयो म्हारिराज्यछे
श्रीरकिणहीवस्तकरीचिंताकमीनहीछे तिवारेउणेआवरलदीया तेरतलेआवतांवीचियाचक
३९ मिलीयातीयामांगीयो महाराजम्हेजन्मदरिद्री तीयेकरिस्त्रीमरावे लमेआदरनकरे इहा ४
महोइनअर्थछे नांकामनानकाइ सुखअरुमोक्षकेछेनही दरिद्रवंतनुंराइ १ यांखुंडीवति
हीमुए यांखुजगमहिनीद सूखेदरिद्रीरोगीयो नित्यसेवककासीद वलेराजानेकहे इहा
हेसुदरिजजोनरांथीयो तोआपहिरांथेआइ भिक्तोनुंनितकोपिनी कालमुखीसदजाइ १
तोसंअभिकोकोपीयो कालमुखेहिआव भिक्षपापणहमसुंकहे दापीछेजवाव २ वार्त्ता सूं
सि इसोकलहदरिद्रीराघरमांहेनित्यहोइ आपणारखीयारीवातछे इहा कोईसहसउदस्नै
कोईनरेपंचसात येटनरेकोईआयणो कोईनीषनजानेजात १ वार्त्ता राजाकह्यो औसाथो
दरिद्री सवहीदोषकोकारणछे इतरोविचारलीराजानुंदयाआई ताहरांआठेरतनदरिद्रीया
वंदीया राजातोजइसमोउदारविरलहोइलो इयेसिंहासणेवैसो इतिश्रीसिंहासणिवत्तीसी ३९
इकवीसमीकथा २१ वलेश्रीरमुहूर्तेअभिषेककरिसिंहासणवैसणानुंजायो तिसेवावीस

श्रीपुतलीबोली सुणिराजाविक्रमादित्यसारिखोउदारहोइसोइणेसिंहासणेवैसे तिसेराजाभोज
बोलीयोकिसकोउदारजाती पुतलीकथाकहेछे उजेणीनगरीराजाविक्रमादित्यराज्यकरे राज
करतांएकसमय नानाप्रकाररांकोउक आश्चर्यदेषणरीतांई दरषकरिदेशांतरगयो तेथि
१देहरोदेषि महादेवरीपूजाकरणलागो अरुध्यानधरिदेषेतो जगन्नाथजीयेस्तुतिकरि
जाणेसोस्तुतिकरी जाणेसोमोनएकाग्रस्तुतिकरी इहा मांबोलुंनास्तातिकरु नाप्तजुना
सुणकांन एकजातोरअवरलवित धरुंनश्रीरहिध्यांन १ वार्त्ता एतोकहतांएकविदेसीपुरु
षतीयेसुंपरस्परगोष्टकरतांराजानुंवलषीयो असकह्यो अहोतोमांहितोराज्यचिन्हदीसे
तोतुंराज्यछोडियरदेशाकपुनमे गयोआयुर्दायफिरिनहीआवे इहा चंदोवलिरजगमे मन
यहोवलिहोश गयोनजोवनवाजमे मूवोनजीवेकोइ १ वार्त्ता इयेकारणराजाजेविलासक
रिसुषभोगवि राजाकहेछे इहा हेमहर्म्ययुवतीसुलज धांनधांनपरधांन योवनहरणोसु
लनछे थिएडलीनविद्याज्ञान १ जलतरंगसो विनवमणिण अरुयोवनदिनच्यारि आयु
अंमजलघटनस्यो तोवणिधर्मविचार २ वार्त्ता फेरिराजाबोलीयो जेयिणकार्यथीदीसे

सिंहासण है थारो सुष दुष तूं कहि ताहरां विदेसी कहै छै सांभलि हुं नीलपर्वत नै विषै कामाख्या देवी रो दे
५० हरो छतो तेहरी कनारै एक विवर तीयैरा कपाट जमीयार छै सो कामाख्या देवीरा मंत्रसेती उघडै
छै तीयै मांहि रसकूंभ छै तीयै करि लोहरो सोनो हुवै तेथि हुं वारिवरस रहीयो मंत्र जाप होम
कीया पिण द्वार उघडै नही ताहरां हुं तलफ तलफ रहयो हूं गलनुं कहि छै ताहरां राजा कह्यो थे
ही तो कोई कारण छै हुवा मंत्र विना आकार नही अबधि विण नही मूल धन हीना द्रव्य विना नही
पिण आमनाय अनुकूल १ बात्ती तवा पाछै तिण विदेसी साथै राजा गयो आरं रात्रि देवालय
रह्या ते आधी रात्रि देवता आइ कह्यो राजा ए छित्रं कंपुं आयो इयैरा कपाट तो षुलै बत्तीस ल
षणो पुरुष बलि द्यै तो ए कपाट षुलै नही तो नां षुलै ताहरां विदेसीनै सूतो मेल्हि आप पोतेजि
धार भाइ करयो जिके देवतारै बलि चाही जै सो लेज्यो कहि सिर काटण लागो इतरै देवत
इ हाथ पकड्यो कह्यो अहो सत्पुरुष हुं तूठो वर मांगि ताहरां राजा कह्यो प्रसन्न हुआ तो इयै
परदेसीनै कंधीरो रस लेण द्यो ताहरां कामाख्या देवी द्वार उघाडि रस दीयो तीयै करि वैरे सिध ५४
ई राजा उजेणी आयो तीयै कारणि कहो जै छै इसनो उदार होइ सो सिंहासण बैसि इति सिंहा सो

इति सिंहासण बत्तीसी री बावीसमी कथा २२ वलि राजा भोज मुहूर्त्त लेइ सकल आनिवेक करि साम
ग्री करि सिंहासणे बैसण लागो तिसै तेवीसमी पूतली बोली अहो राजा नो जइ इयै सिंहासणे सो
बैसै जिको राजा विक्रमादित्य सरिषो उदार होइ सो बैसै तदि कह्यो किसो क उदार हुतो पूतली
कथा कहै छै उजेणी नगरी राजा विक्रमादित्य बत्तीस राजकुली रा राजांन राजेरा मुकुट बंध क
रि विराजमांन छै चरण कमल तीयै हुं राज भोगवतां दिग्विजयरी विष्यात कीर्त्ति कां नैगमं न
लतो तिको राजा पाछली पिछली रात्रि रहै तिवारै मंगल शब्द शंषनेरी मृदंग झालरी नो बत्तिवाजे
पलिंगसेती ऊठि विनदास नै बैठो परमात्मा रो स्मरण करि मन में चितवीयो जो म्हांरे कुलधर्म ऊ
ण इसो विचार सात मजुर ब्राह्मणानुं देतो नृमिपणहूरे पछै सर्व आयुध संभालि श्रम करि दं
त धावन करण लागो पछै मर्दनशाला मांहि जाइ मर्दन कराइ पछै मंजन करि पछै मंनप
मांहि राज लीला करि थवित्र अंगोछा सुं भीलि अंगोछि पछै देहरै जाइ द्वाकुराजी रा सत्तिपूजा
करि प्रणाम करि आपणा प्रधान मुंहता आन्नूबल सर्व पहिरसभा मांहि आइ बैठो प्रजारो न्या
य करै छै इसे सोइजै आरंकह्यो महाराज रसोई त्यार हुई छै ताहरां राजा सभा मांहि थी ऊ

सिंहासण ति मध्यांकसमेदेहरासरकरि कहीयोदीनअनाथउ:खितनीयांरेदानचिंताकरि एतोकी
४९ दमित्रस्वजनपरिवारसर्वसहित षटरसभोजनकरि ऊपरितांबूलकपूरलोंगलेईऊठीया
पछेचंदनकेसरिकस्तूरीलेपगात्रनुंकरि फूलएकसोनाराषत्यंगपरिनरीयोवध्धरलेतला
ई तीयेपरिसुषकरि पछेउजनयपसवाभाफेरियाछेतकीयादे वामपसवामोफेरि निद्राक
रिघडी४पछेशुकसारिकादसआदिदेजीवसुंविनोदकरिवछेघडी१सर्वेसुक्ष वोलीवि
लासकरि घडी२स्यांमलीलाकरे तगपाछेअनुनवसुषरेताई संध्यासमेवंदलकरि राज
सनामांहे वातकरोसगुणीगाइनविवध्वस्त्रा स्त्रीपुरुसरूपयोवनवाणी छत्रताधारेदि
त्रचरांका माथेधवलछत्र दोनुंदिसिदोइस्त्रीअतिसुंदरयौवनलीयां स्वर्णमोतीजरीरेसमप
श्रीनकीयंचामरढालेछे वत्रीसराजकुलीराजपुत्रविनोददेषतांवेगाछे व्याकरणनादस्तुति
करेछे तथापिछेमनकहे त्यांरादेवगुरुरास्मरणसेती आत्मापवित्रकरिनिवापहोइ स्त्रीसुंवचन
विलाससंजोगकरि निद्रानेत्राग्निहोइ इसीभांतिसंसारसुषविनवअनुसारकरिदिनवितीता ४९
होवेछे एकसमेरात्रिघडी४पाछिलीथकाउ:सुप्नदीठो प्रभातेपरधाननेसवी प्रधांनेकह्यो जे

महाराजश्रीउ:सुप्नकहुं एकअरिष्टउपद्रवरोकारणहोरहेछे तीयेकारणिजपतपहोमदांनदेई
पूजाकीजे ज्युंकल्याणहोइ एतोसुणिमनमांहेराजाविचारीयो जोजंजापकरुं तपस्या
रोनिश्चोकरुं देवसेवाकरुं ईश्वरीपूजाहोमकरुं अरुमहादानकरुं अरुइहोकह्यो इ
होनित्यशरीरनदेषीये किनवनथिरकजुंहोइ निश्चेमृत्युजिहांतिहां सोवतवेवतजोइ१ वा
लो अैसोसमजिनेमारीवुलायो अरुकह्योजेतानंभारमांहेहोइतेसर्वल्याव अरुनगरमां
हेपनहोफेरीयो जोएकरसीजीयानुंजोचाहीजेसोद्रव्यलेजावो इसीभांतिद्रव्यलुटायो
दिन३लूटीयो इयेसमेराजाविक्रमादित्य ०००००००० आवकोमिध्यनउ:सुप्नरेवालेरव
स्वीया इयेकारणिकहुंछुं राजाभोजविक्रमादित्यसरिषोउदारहोइसोइणसिंहासणो
वेसे इतिसिंघासणबत्रीसीरीतेवीसमीकथा२३ वलेओरमुहूर्तेराजाभोज सकलअ
निषेककरिसिंहासणवेसणनुंजावे तिसेचोवीसमीपूतलीबोली अहोराजाविक्रमादि
त्यसरिषोउदारचित्तहुवेतोवेसो राजाभोजबोलीयो किसोकउदारहुंतो तदिपूतलीक
याकहेछे उज्जेणीनगरीराजाविक्रमादीतराज्यकरेछे इयेसमेरेविषेपुरंदरनगररेविषे धनप 42

सिंहासण तिसेठकोमीभक्ततीयेस्यारबेटाकंतातीयानुंमनयतिव्यवहारीयेअंतसमेबेटानुंकह्यो बेटाउसमे
४२ जानेजारहिज्यो जेलारहतांनवणेनोउहे ईथिघाटराविक्रपाईयारेनीच्यारकलसीयाछे सो
थेसमऊलेज्यो मांहोमांहिलमेबोलोमत संतोषमांहेरहिज्योमिलज्यालिज्यो जुदाजुदाऊ
वो त्यारेच्यारेकलसवांटलेज्यो एतोकहिसाहतोमूवो पाछेकेतेकदिनेमांईमांहोमांहिवणेनहीं
ताहरांच्यारेवोल्या हिवेतोजुदाऊस्यां ताहरांच्यारेकलसबाहिरकाढीया देखेतोएककलसमांहि
सुंनरीये बीजोकोइलासुंनरीये तीजोकलसहाडसुंनरीयो चौथोकलसतुसासुंनरीयो च्यारेक
लसदीठा पिणमांहोमांहिसरस्वैनहीं तिवारेकरामतापंचायासगया तेपिणपंचेपिणन्यावनकीये
तांहरांराजाविक्रमादित्यपासेगया तेपिणपिलसरस्वैनहीं तिवारेतेऊगमतापरतिष्ठानपुरगया ई
येअवसरआगेदेखेतोनगरमांहिलीकवातकरेछे जोएथिडइब्राह्मणनलेकलश असरुवांरी
वहिनविधवाऊंती तीयेरेनागकुमाररोगर्भरहीयो ताहराब्राह्मणसरमशमालसऊंता तिके
विदेशगया वहिननुंलेगया उथिनागकुमारउवेरोलगवामीमिलीयो देवतारोसरूपछे ना ४२
गकुमारआइकह्योमांहरोगर्भछे ब्राह्मणीवोली बेबेथारीऊसी असरुंदसमासमेगर्भरही

यो उथ्यारादीकरारीप्रतिपालनाकरज्यो नागकुमारेकहीयो अंमोदेवताछुं म्हारोपुत्रछे उकि
सुसंकेछे थारोभलीऊंतु गुपतीऊउहाराकार्यकरिस ब्राह्मणीचिंतारहितहुई नागकुमा
रआवमेदिनबवरज्ये पछेदशमेसदीनेपुत्रजण्यो सालिवाहनऊवेरोनामदीयो सोसालिवाहन
मातासहितकुंनारेरेघरिरहे उवारोनरणपोषणनागकुमारकरे एकदिनसालिवाहनघररीचौक
वेठोऊंतो अनेउवेच्यारेजणाजगमता राजारेदरबारऊंताऊंता तीयारेसाथिसालिवाहनकुं
नारेरवेटनेकारीकजाइराजारेदरबारगयो असवोलीयो अहोराजारांइयेरोन्यायकुंकरिस ता
रांउवेच्यालजोवणरीतांईकहीयो म्हेईजोवांबां जेन्यावकरि ताहरांसालिवाहनेसाहराबेटाव्य
रेबुलाइपूछीया उवांच्यारेकलशवोलिसालवाहनरेसुंहआगेधरीया असरुकहीयोएकलनुंदि
राहीयोछे ताहरांकलशबोलीयो तेमांहिमाटीनीकली असचीतीछे तीयेमांहिपनेरोनामछे सा
लिवाहनेकह्यो घरहाटवासणसर्वधरतीछे सोवडाबेटानेदीज्योछे बीजाकलशमांहिकोइलाहे
बिचीतीदेषेतोबीजेरोनामछे शालिवाहनकह्यो सोनोरूपोसर्वभाउबीजानेदिवराईछे तीजामां
हिहाडनीकल्या तदिवीतीदेखिकह्यो घोडाहाथीगाइबलदऊंटवहिलसर्वदिराहीयोछे चौथा

मांहि देषेतो असवे ताहरां सालिवाहन कहीयो अन्यसर्वकिराणो सर्वमिगाई षोआवे टासुं दीराक्षो
 वे कयमो कीयां रोजीयां पोसि इसमो न्याय करिस खाइ दीया साहं राबेटा सर्व षुसी हुइ घरिगया
अरुन्याय देषि लोक षिण षुसी हुवा इसी न्यावरी वात सुणि राजा विक्रमादित्ये ताहरां शालिवा
हननुं परवाण हो मातस मेल्हीया जे कहायो जे तुं उजेणा आव शालिवाहन कह्यो जे कुंकि णही
रो चाकर नहीं तेम्यो आवुं मो सुं जिणरो कार्य हुसी सो मो पासि आवसी इसा वचन सांभलि राजा
सेना सहित प्रस्थान धुरस्थु वालीयो तेष्यि सालवाहन लोकारै कह्यो सामोहो पिणन गयो ताहरां रा
जा कोप कीयो ताहरां नागकुमार रा पुत्र जावथ्यो सालिवाहनने रमवाने कुं नारे घोमा हाथी प्याद
कीया था सो कुंनारे रा घरनरीयो थो सोसर्व सजीव हो इ संग्राम करणनुं नीसरीया जाइ राजा
सुं जुटीया पिण राजा हीना गोन हीं दोनुं बराबर हीया रात्रे नागकुमार बेटा रो प्रचाक रि विक्र
मादित्य रो कटक मसी यो मूर्छित सेना हुइ तिवारे विक्रमादित्ये मंत्र करि वासग आराध्यो आराधी
कह्यो कि सुं कार्य राजा कह्यो सर्प करि मूर्छित हुवा तीयां सुं अमृत चाहीजे ताहरां राजानुं साथे लेजा
इ अमृत दीयो सो अमृत लेआवतां दोइ पुरुष आया ति लेया थ्या ताहरां राजा रहीयो थे मांगो हो से

कुण हो उवां कहीयो म्हे शालिवाहन राचाकर छां शालिवाहन मेल्हीया छे ताहरां विक्रमादित्ये
विचारीयो जो वैरी राचाकर छे अरु वैरी मेल्हीया अरु वस्त इसमी जो विरधी न दो कुवइ आयणी
हाली कुंवे तो पिण कुं देइसि तो मोनुं वचनपालणो इसो विचारकरि वेनुं दीयो पछे नागकुमार
सजु एहो इनाग वुलाय लीया विषरी विलीयो विक्रमादित्य री सेना जगिवैठी हुई तीये कारणि
कहुं छुं राजा नो जइ इसमो उदार होइ तो इ ले सिंहासण बेसे इति श्री सिंहासण बत्रीसी री चौवीस
मी कथा २४ वले वीजे मुहूर्ते सकल आनिवेक सामग्री करि विधि संयुक्त मन उच्छाह सेती चूड
राजा गो तिसमे पच्चीसमी पूतली वोली राजा नोजइ थे सिंहासण ले बैसे जीये रो विक्रमादित्य स
रिषो उदार चित होइ सो इ ले सिंहासण वेसे तदि भोज कह्यो किसमो कउदार हुं तो तदि पूतली
कहे छे उजेणी नगरी राजा विक्रमादित्य राज्य करे छे एक समय सुखरी राजा सभा राजछत्र
धार करि बैठा छे काव्य विनोद लीला विलास अनुभवे छे तीये समे वो लीए आइ कह्यो महाराज
एक ज्योतिषी च्यार जाव जोतिषरो धरण हार अथपदा वणहार शुभ राति सुं आवे छे वाहिर ऊभा
छे राजा कहीये नी तरि बुलावो ताहरां ज्योतिषी नी तरि आय महाराजनुं आसीर्वाद कुं कम

सो आपजोग्य आसनेबैठो राजा पूछीयो कोल २ कला ज्योतिषरी थांमेछे उवां कहीयो नवग्रहांरोचा
र ससावीसनक्षत्रांरो नाव ग्रहांरो उदय अस्त वक्रमार्ग अतीचार वेध अवस्था दृष्टि शत्रु मित्र भाव
बल अबल दिव्य अंतरकनो मांग स्वरलक्षण व्यंजना अंगनिमत्तकरी अतीत अनागत वर्त्त
मानस्वरूप एतासर्वकालुं राजा कहेनुं आगमरी वातकही ज्योतिषी कह्यो वरस १२ पाछेबारह
बरसरोकालपडसी सो सांभलज्यो कहु राजा कहीयो अहो म्हारे राज्यनीति मारग चलेछे सब
लनिबलनुं धकावेनछे निराधार उपद्रवनछे मर्मनायलनछे सत्यनुं आदरनछे पापप्रकृतिनछे
अकराकरनुं करनछे वर्णावर्ण आचारछे दुर्भिक्ष क्युंहोइ ज्योतिषी कह्यो यदि शनीश्चर रोहि
णीनक्षत्रनुं नेदिनी सरे अरु शुक्र रे घरिजाय तदिवर्षा न करे बारवरस इयेंवरसइ सो जोगछे
एतीबात सुणि राजा दान पुन्य होम शांति कर्योइक कर्म प्रजारेकारणि करनो जुवो पिणवर्षा न होइ
या बात निश्चेछे ग्रामयादिताग्राम रो स्वामी निश्चंत रहे तो देशरा धणीनुं दोष लागे ताहरां विक्रमादि
त्य विचारीयो जुंदेशरो धणी अनेम्हारा देशनुं काल पडेछे दोष म्हारेशिर पिणकिसुं उपाव कीजे
राजानुं सोच तारा त्रिविहाणी उपाय नकाग्यो तदि प्रातबोतां आकाशवाणी हुई अहो राजा कोइ

बत्तीसलक्षणो पुरुषहोइ इतीये नुंबलदेव मेघकुमार छोडेतो मेघवरसे दुर्भिक्ष कनजावे इसी
वाणी सुणि राजा आप बत्तीसलक्षणोछे तो अरु परोपकारी तांई आरंभ कीयो खड्ग करि सा
मग्रीतयार करि राजा आपणे कंठिकटारी मेल्हि शिर काटणलागो इतरे मेघकुमार राजारो हा
थग्रह्यो कह्यो राजा तो अपरस्त होइ मांगि राजा कह्यो इंद्रो तो अबा आगे कालनपडे कदे सदा
वर्षा समय वर्षा होइ मेघकुमार कहीयो तथास्तु आजरै कालइ सो दीही सेछे घणा जोक
मालछेजाइ कालनपडे तीयेकारणि कहुंछुं इसकोइहुवे तोइ ए सिंहासणे बैसि इतिसिंहास
णबत्तीसीरी पचवीसमी कथा २५ ओर मुहूर्तेराजा जोजा अभिषेक करि सिंहासणे बैस
णलागो तिसे बावीसमी पूतली बोली राजा इये सिंहासणे सो बेसे जो थे रो विक्रमादित्य
सरिखो उदारमनहोइ सो इये सिंहासणे बैसे भोज कहीयो कि सो कुउदारमनहुंतो पूत
लीकथा कहेछे उजेणीनगरी राजा वीरविक्रमादित्य राज्यकरेछे तीयेसमे बत्तीसलाप
विमानरोधणी राजा इंद्र देवदेवांगना सर्वपगेलागेछे सो स्वर्गमांहे बेठो कहेछे सांभलोदे
वताउ सांप्रति मनुष्यलोके परप्राणनी रक्षा करे दुःखकाये अरु महाधन धान्य स्वर्णरूप

सिंघासण दांनकरे इसौराजाविक्रमादित्यसोधन्यछै इसीइंद्ररामुषथीप्रसंसासांभलिदेवताहसीया अनेरा
४५ छो धन्यराजाविक्रमादित्यजीगेरीइंद्रप्रसंसाकरैछै इतेकोईकदेवताइंद्ररावचनअनमानतो २
आपणमित्रनुंकहैछै सर्वयुक्तिउक्तिछै दूहा जोकोईएकमयाकरै तोसरांदेवकुवार त्योको
ईएककुमयाकरै विसरावेवकुवार १ वार्ता इसावचनसुणिनैवेरैमित्रकह्यो आपांउथिजाइ
मृत्युलोकमांहिदेषस्यां इसौविचारदोनुदेवतापरीक्ष्याकरणरीतांई विक्रमपासिगया राजानु
छोमेवडीयेदिषिकरि एकगाइरोरूपकरिदुर्वलकरिपंकमांहेफचिरही अरुराजानुदेषिनेपु
करतीवोली ताहरांराजागाइरोआष्ट्रसम्भलि घोमासुंअतरिद्याकरि गाइनुंपंकमांहिथीषैंचे
छै इतरैवीजोदेवतासिंघरोरूपकरि पुंछपछाडिपृथ्वीकोधूपमानथको सिंघनादकरतोगाइ
तोआइदिषाईदीधी तीयेनेदेषिराजाविचारैछै दूहा दुर्वलरीरिक्षाकरूं दुष्टकुंतादयाआणि
दुष्टरकरिरलीयो लाजकोइनविहांणि १ वार्ता षिणइणदुर्वलधेननुंराषिणी इहा हिंसावन
महोतदै सहसएकवजूगेर सवलनिवलनुंमारिले धकैपनलेओर १ वार्ता राजाएहकरनलन ४५
ताहीवा षिणऊवीयोनही अरुसिंघगुंजारकरतोवीहामतोरहीयो इतरैरातिपडी सिंघगाडै

ताहरांविचारीयो गाइतौहालिनसकै अरुगाइनुंछोडिजाऊंतोसिंघगाइनुंविनासै तोआजरात्रि
कुणथरहीस गाइराविस कहीयेछै दूहा आतमआक्षितांकिको स्वामकामसमननजाइ मित्रकाय
दुर्वलदया करिकेदोइसहाइ १ विरुपरायोहांकल्यै पुरूपगारकरेह मांगतयाचकनुंदिये सोधन
जाणीजेदेह २ वार्ता इसौविचारिराजाध्यारवुदरषवालीयांरात्रिउनीगयो प्रातहूओ ताहरांरा
नुंदेवता आपरोरूपकरिप्रत्यक्षहोइआइअनारस्यां अरुआपरोकारणकह्यो युंइंद्रमहाराज
प्रसंसाकरी अरुआपआयारोसर्ववृतांतकह्यो वोल्याजीअम्हैवरमांगो राजाकह्योमाहरै
सर्वथोकछै कासुंमांगुदेवतावोलीया देवदर्शननिष्फलनजाय तीयेकारणिआकांमधेनुछै
ल्यो आवतांएकब्राह्मणरोपुत्रजायो छैतो अरुघरमांदेषाणनुंकुंछुहीनही अरुवालक[illegible]
रोवै ब्राह्मणीराहांचलोइधनही अरुब्राह्मणअणकुंनगरैसरमायो घरथउठिआयो राजावाज
करांवतोदेषिरहीयो लोकेकहीयोवालकइधविनारोवैछै छेगाइहोतोवाळकनरोवै वालकमाहरो
परोउपवणमिटे इतरोलोकेकहीयो अरुकामधेनुसरीषीगाइ मनोवांछितरीपूरणहारी ब्राह्मणनुं
दी घरिआयो देवताइंद्रआगैजाइकहीयो राजाविक्रमादित्यजिसको सुणीयोतिसकोदेषिआया

सिंहासण तीयेकारणिकजेहु इसनोउदारहोइसोइणेसिंहासणेवैसो इतिश्रीसिंघासनबत्तीसीरीबावीसमी
४६ कथा संपूर्ण श्रीरस्तु इहैंराजानोजश्रोविधिसंयुक्तवैसणनुंहुश्रो तिसेसत्तावीसमीपुतलीबोली
जीयेरैविक्रमादित्यसरिखोउदारचित्तहोइसोवैसो जोकबोलीयो किसोएकउदारहुंतो तदि
पुतलीकथाकहैछे उज्जेणीनगरीविक्रमादित्यराजाराज्यकरैछे सोएकसमयराजापृथ्वीरो
कोतुकदेषणनंरी देशांतरगयो तेथिएकनगर तेथिएकदेवालयहुंतो तिहांदेवादेषणआ
तवेसिपुरुषआयो जवेनुंदेषिराजाकहीयो कोईभिनधारीपुर्लवइ हाणएकरहिपरहोगयो
वलेवीजेदिनउहीपुरुषकोयोनपुरांणीपढिस्यांहीतो दिलगीरदेषिपुछीयो कान्हेथारेउसमे
वैसहुंतो अरुआजकोथीनपढिस्योतिकासुं उणोकह्यो अहोसाधुरसहुउयारीतु आजमेज
थीवेलहुंसर्वहारयो अरुआयोतु मोनुंकपुंछो तोफेरिजाइषेलुं इहा नहीं धनाकरपांहुरा सजे
नउजेहुत्र सत्ताइवलसेवीये तंथ्रपसायेहुआ १ बार्त्ता एतोसुणिराजाबोलीयो दयाआणिअना
थजांणिकहै सुणिरेइहा धनकारणिजुयेरमे सुषकारणिकरैसेव जोगवाहेनीवमांगिने तीनवि
देवनादेव १ बार्त्ता सुणिकरिधूतकारीबोल्यो अहोमहापुरुषजेहुआरोसुषनहीजांणलो जेसु ४६

णि इहा नोमनाचअमृततणो जोजनस्वादविकार जोजनअभिमांनीकरै स्त्रीसंघकरविा
चार १ गीतनृत्यवादित्रसुषपराधीनसेजांणि अध्यात्मनांहितसह्यो धूतमहासुषमांनि २ जु
येनुंकेलीनमनि तुंजोगवंछ्जोहोइ अचिरकालगोरषजु पावहितत्वहिसोइ ३ बार्त्ता एतो
सुणिराजामनमांहेविचारीयो औतोमहामूर्षकिसुकहीजे इहा सर्वथाएहुंतेअधिक अज्ञानम
हापापहुंणि अज्ञानेहांकीघ्यको हितअहितनजांणि १ बार्त्ता जोहिताहितराजाजवेनुंस
षदेतो उवेकहीयो जोउपरापकारकरणसमर्थहुतोएककार्यकरि राजाकह्योवेलणोत्पजे
तोतुंकहैसोकरुं उवेकहीयोजोमसितोकार्यकुंकरुंकरसीतो राजाकहेकार्यकिसो तिवारे
उकहे रत्नसानुपर्वततै तिहांदेवीरोप्रसिद्धदेहरोछे तिणआगेएककुंईछइ तिणरोद्वारएकरु
णढकै एकहाणअघमे तेथिमिकोप्रवेशकरिकलसोकुलसनरिलेआवे तीयेकरिईस्वरी
रीविधिसंयुक्तपूजाकरि आपणोसिरकाटिवलदै तीयेनुंमांगीयोवरद्येईस्वरी पिणमोव
तेइतरीनजावै तादरांराजासांभलितिजाइसांभलीयोहतो तिणजोतिपूजाकरिशिरकाटण
लागो इतरेईस्वरीहाथपकडिकह्यो मांगिवरमांगि तादरांराजाकह्योमोनुंइणतोजिसोवरमां 47

सिंहास० ग‍तिसोकुवारीनेद्यो तादरांदेवीकुवारीनुंप्रत्यक्षहोइ कुंआरीनुंकहेछीतणरोवरदीयो देवीअंत
४७ रिक्षहुई राजाउजेणीआयो तियेकारणकहुंछु इसोपरोपकारीहोइ सोइणेसिंहासणेबेसो इ
तिश्री सिंघासणबत्रीसीरीसत्तावीसमीकथा २७ वळेश्रीरमुहुर्तेराजानोजसकलअनिवेकक
रि सिंहासणिबेसणनुंकर्यो तिसेअठावीसमीपूतळीबोली अहोराजानोजजिको वीरविक्रमा
दित्यसरिखोपरायेदुखकाटे सोइणेसिंहासणेबेसे राजानोजकह्योकिणरोदुखकाट्यो पूतळीकथा
कहेछे उजेणीनगरीराजावीरविक्रमादित्यराजा क्याल सेतीपृथ्वीमांहिविचरतो दक्षिणदेशरेवि
षे आंबारावनमांदेवेछाछे तिहांच्यारपरदेसीपुरुषमिल्या राजाकह्योथेकुणछो कांइसुआया
अरुओरविशेषसमाचारकहो उवांकहीयोकिसुसमाचारहो छिवणोकेपरमेश्वरकोवतारछ्या।
तोजाणपायो तादरांराजाकह्योकिसेकारणि विदेशीपुरुषबोल्या सर्वमांहेवेताळपुरनगर तिहांनर
मांसप्रियदेवताछे तीणेरीजिकोनकिसेवापूजाकरे सोनरसुंमांहिलेमारे सोतीयेनिमित्तमनुष्या
नुंलेमारे तेथिन्हिअग्नानसेतीजायथा लोकेजाल्या वलदेणरेवासते म्हारोजोरकोईनहीं तादवं
ध्यालंता सोआधीरात्रिबुमाइबनोकछुजालिनावा विनयसर्वेतिहांवीजमेल्हिनावा पूतळीबातसु ४७

णिराजाव्यालरीतांइतिथिगयो अरुदेषेतोकोइकपरदेशीपकड्योछेकांयेछे उवेनुंस्नानकराइ
फुलांरीमालापहिराइ गाजतावजावतासतीनीपरि देवतापासिनिमसालानादेखि राजायणि
दयाकरिचिंताकरतोसाथेजायेछे अरुमनमेविचारेछेराजासाथ्या सवेविसुरककरवो सवेइ
रकस्सनीरूणेजीवा सवेविजीवअपप्या सवेमरणजवांदतो. बालो नाइमोकनाइथेराजाण
काढीया तोकिसीमाहरीकथा अरुकिसुंम्हारीशक्ति तोजीयेतीयेप्रकारे ईयइनुंराषीयेतोनल
इसोविचारकरि लोकानुंकाढीया रेलोकोइशालनुंछोनिछोमरीबनुं मोपुरुनुंकाजो जिमन्हपतिथा
य अरुदेवताप्रसन्नकरसी एतोसुणिप्रसन्नहोइविस्मयहोणलागा अहोसर्वमरणसुंमरेछे इहा
कुलनिमस्इकबंमीये ग्रामनिमित्तकुलनीह ग्रामजोककुलबंमीये प्राणनिमित्तपृथ्वीह ९वाहो
अरदेखोओपुरुषपरायेकारणेप्राणद्यांमेछे तोकोईकमहासत्वाधिकछे तीयेअवसरिजोकवांबाक
रि यसगजाशेवाणोपमविना वीजोसर्वपरदेशीनेछेसापुरसनेहाथेपकमाय आपस्नानकरि
पककाढि जितरेकासिरकाटे तितरेदेवतायेहाथग्रह्यो अरुप्रत्यक्षहोइकह्यो अहोसत्वाधिकह
यावेतवरमांगि तादरांराजाहाथजोडीनिकरिकह्यो देवीप्रसन्नहुआतोलोकानुंवलिवकसो लोक

सिंहासण बलरीचिंतानकरै देवीकह्यौवकस्याजोनवनैवजांनावननिकरो राजाविदेसीवुरुषां लोकांरीउव
४८ कारिउजेणीआयो इणकारणिविक्रमादित्यसरिषोजोहोइसोइणसिंहासणबैसो इतिश्री सिंघास
णबत्रीसीरीअठावीसमीकथा २८ वलेश्रीसुभद्रैराजानोउविधिसंयुक्तसिंहासणबैसणनुंउद्यो
तिसैउवरतउगुणतीसमीपूतलीबोली अहोराजाजिकोसत्वाधिकहोइविक्रमादित्यसरिषोइणसिंहास
णबैसो नोजकह्योकिसोकसत्वाधिकजांतो तदिपूतलीकथाकहैछै उजेणीनगरीविक्रमादित्यराज
करैएकदासमयकोइकसामुद्रकपाठीपुरुष स्त्रीराश्चनअश्चनविज्ञजांणतो उजेणीरैबाहिरवा
सलेरह्यो तेथिकिणहीपुरुषरैपगैपद्मदीठो मनविस्मयहुओ सोजीयैरैपगैपद्महोइ सोएकलो
नवराहणोकुंफिरै वलेदेषेतोएककठीयारो नारीशिरलीयेआवतोदीठो तेथिपिणविस्मयहुओ जे
इयैरैलछंणतोइसमा अनेओकाष्टभारवहैछै ताहरांसामुद्रकशास्त्रनिःफलकिसुंकीजै वलेविचा
रीयोउजेणीमांहितोजाउं इतरीबुद्धिआयो तोविक्रमादित्यनोदेषुं उजेणीमांहेगयो विक्रमादित्यरीस
भामांहेजाइ आसीर्वाददे राजानुंदेषिअतविस्मयहुयनो ताहरांराजाउवेपंडितनुंधोषोकरतोजोतिष
णियो अहोब्राह्मणउंविस्मयप्राप्तहुओदीसैछै सोकिसुंछै ब्राह्मणकह्यो देवमैमारगआवतांसमस्त ४८

राजालक्षणसहितएकपुरुषदीठो अरुउणरैमाथैजकडीरोभारोदीठो अरुवलेएकपुरुषदीठो तीयैरै
पगेपद्मदीठो तिकोतोएकाकीउगराणोदीठो अनेतथिउदेजलजलक्षणसहितदेहअनेआसमुद्रांतपृथ्वी
रास्वांमी इथिकारणिमोनुंविस्मयहुवो जेशास्त्रमिल्योनही ताहरांराजाकह्यो अहोपंडितशास्त्रविप्रका
रनाछै एकसामान्यदीजोविशेष तीयैकारणिजलीनांतिदेषि उंकिसुंसामन्यकिसुंविशेषएतोसुणिविचार
नैपंडितकह्यो राजाउंधर्मीनाग्यवंत बुद्धिवंत हुवा थांनीगर्वकरैनही बोलैमोठीवांणिसवातांसमरथ
छै अवगममनदिपिजोणि १ वाक्यतोइयैसुंसामुद्रकशास्त्रअवगांहिजे बोलायो महाराजशास्त्रमांहिअ
नेकपुरुषस्त्रीराश्चनअश्चनलक्षणकह्याछै पिणकुंविशेषछैकिणहीकरैसर्वशुभलक्षणहुवा अरु
तालवेकाकपदहोइतोशुभलक्षणरोअशुभफलहोइ इसहीबातसांभलि राजायैकठीयारोवुलायोउवै
रोतालूषोदीठो पकसूधीआटारोपिंडकरि तालवेचढिकाढीयो तीयेमांहिकाकपददीठो ताहरांमनपर
तीयो ताहरांवलेराजाकहीयो औरपिणकोइविशेषपंडितकह्यो जोकिणहीरैसर्वकलक्षणहोइ पिण
जोउणरीआंत्रांकावरीहोइतोशुभफलरीबातकहीजे इतरैकहतांराजाछुरीलेपेटविदारणलागो आवादेषा
णरीतोई ताहरांपंडितेराजाहाथग्रह्यो राजा[illegible]कावरीआंतांछै थारोविनवदेषिजोणीयो जोकांव

रीश्रीजामजोइतोइयै लेकालवालानेराज्यकाजे इहा हानिअर्थघणोकवे मांसेसुधीथेदोइ
जोगलवामदिजोगवै नयनस्त्रियाजोइ १ गतिकमीवादनमिले स्रुनस्वरेआज्ञामान सत्वगु
णेसकलुकवे १सामुद्रकज्ञान २ वार्ता इमआस्त्रधराकीधा पंडितनेधनदेविदाकीधी तीयै
कारणिककंबु इसौधीर्यवंतहोइसोइलेसिंहासणैवेसो इतिश्रीसिंघासणिवत्रीसीरीअगुणा
तीसमीकथा २८ वलेराजाजोजवीजेमुहूर्त्तेजोइ सकलअग्निषेककरिसिंहासणिवेसणा
लागा तिसेतीसमीपूतलीबोली अहोराजाजोकंवमेराजाकदावैछै तोमेतोवमीसरमचाहीडे
वेवार२ एहेसोकिसोकारणछै किसोकहतोराजाविक्रमादित्यतोवैसि तादिपूतलीकथाकहेछै
उजेणीनगरी राजाविक्रमादित्यराज्यकरैछै एकसमैपोलीयेआइयुदरायो जोकोईकवेलाजनो
मवस्मावदीयोछै परदेशीछै असकहेछै कलाकुसलबु अपणीव्यालदेषाकं जोआपणीराजधा
नीसहित देषोसावधानथणे तादरांराजासेवासमयकरि सकलसामंताकरिसहित सभामांहि
आइवैठा कहोयोकिसुंअपूर्वव्यालदिषाईस इसमेआश्चर्यसोजाणिवेतालसाम्होदेखिरहीयो
छै इतरैकोईकपुरुषएकहाथ्यतरवारजघामीलीयां बीजेवामैपासेरूपसौभाग्यवती देवांग

४८

नासीस्त्रीछै सकलसभानुंविस्मयकपजावतो आइप्रणामकीयो असकहेयो महाराजसर्वसंसा
रअसारछै तीयांमांहिदोइवस्तसारछै एकमाया [illegible] असकेएकतीजीसरस्वतीपिणसारव
हेछै पिणमाहरीमनमांने इहा दीसेसोनयसुषदीयो पाइजेकरप्रीति सरसेसुलेसुणाइये पिण
क कुंकोइनप्रीति १ वार्ता इयेकारणिसेती मायानिस्त्रीपराये हाथनकरणी असईयांकंपरिवीजेरै
वैसासनकरणो इहा एककन्याअसकामनी जोकोईककंधरेहि उविलसैअसजोगवे रहेतेपाछी
देह १ वार्ता तीयेकारणिउहेम्हारोवचनसांभलो कंइडरोसेवककुं असएथिरजंबु जिवारेकार्यहो
इतदिस्वर्गजाउंबु जोआजदेवदाणवांयुद्धछेबै जंपिणजाइस तिणकरिम्हारीस्त्रीजतनकरिराषणी
वहेपरस्त्रीपराङमुषछो असपरोपकारीछो तीयेवासतेथांसुंइतरीवीनतीकरंबु असकांमआऊंतोस
तीहोणमतिछो सतीकीधीतोथारेहावलगीरहइस इसमेवातसुणिलोकानुंअचरिजहुवो ओवादी
गरआकाशनुंकमीयुं राजासर्वलोकांजोवतां वादलानांईजोवतोदीवोपछेअहहिङ्क्रओ अस्त्रीजवे
रीजलीछै इतरैधमी १ दीवां वांहएकआइपमी लोकेदीठी इतरेएकपगआइपमीयो पछेवादीगर
रोशिरसरीरआइपमीयो वादेषिसकलहीसुंउवेरीस्त्रीकहीयो येसर्ववैताछोसोम्हारेनाइछो तो

क्रोकुंअज्योकरुं ऊभेऊं अग्निप्रवेश करुं ताहरां राजा वरजी विलवरजी रहे नही ताहरां
लोके कह्यो पाबेरहिसी नही बीजो उपद्रव करि मिरिसी तो सतीरो मारग छे ऊवे छे तो होवण
द्यो तिवारे राजा अणबोल्या रह्या लोके उवे रा पांच अंग नेगन्ने जाकरि दाग दीयो स्त्रीनुं सती
कीधी राजा कुंएक सोक करी नेस जामांहि वेठो उवेरी वात कहे छे तितरे उही पुरुष द्वादिले हा
थिवमगनीया आइ कह्यो महाराज तुम्हारे प्रसाद करि मे स्वर्गरे विषे जाइ स्वामिकार्य कीधो दे
वजी तादाणवहास्या मोनुं मया करिसी बदीन्नी अबम्हारी स्त्री मंगाइ द्यो ताहरां राजा अरु लोक
सर्व विस्मय पांमिने रह्या अनेक द्यो थारो शरीर टुकमा २ होइ पड्यो थो तोयेनुं देखि थारी स्त्री देखि
आग्रह करि वरजतां जोरावरी सती हुई किसु कीजे ताहरां वेताल बोलीयो नहीं महाराजा स्त्री
माहरी राजलोक मांहे छे अनेमोनुं कहो बोसती हुई पर होआ वाह २ इतरो कहतां ही राजलोक मांहि
थी स्त्री नीसरि आई वाम आइ ऊभी रही राजा देखि सरमंदो हुओ अरु माथो नीचो घालीयो ताहरां
वेताल बोलीयो महाराज कुं सरमावो मे इंद्रजाल करि ख्याल दिखायो छे ताहरां राजा संतुष्ट होइ नी
ये समे आयो कुंतो यांसु देश रा राजारो मंम सोपरआंने कामदेव डाइ निजर गुदरायो सो सर्व वेता

लनुं दीयो तीये कारणि करुं छुं जोइ समो उदार होइ तो इणे सिंहासणे वेसो इसिकी सिंघासण बत्री
सीरी तीसमी कथा ३० वलेओर मुहूर्त्ते सकल अभिषेक करि सिंहासणि वेसाणनुं हुवो तिसे इकत्री कीत
तीसमी सलजी बोली सुणि हो राजा जो इस्यो सिंहासणे सो वैसे जो ये रो विक्रमादित्य सरिखो उदार
होइ सो इणे सिंहासणे वेसो राजा कहीयो किसो कउदारजलो सलजी कथा कहे छे उजेणी नगरी रा
जा विक्रमादीत राज्य करे छे तेथि सुदंत नामे सेठ रहे सो आपणी संपत्तिरी संख्या न जाणे उवेरे सोमा
दस नामा पुत्र सो नवो महिल करावण नेज्यो तदि राजाने पूछीयो सुब्यार्कजोग मांहे नींव दिवराइ
आरंभ कीयो पछेयदि उव्यार्क होइ तदि कांम कउवे थंभि णो सवार णो चुलणो काष्टमय पाषांणमय
सर्व पुष्यार्कजोग मांहे करायो केताइक काल वरसि हुआ ताहरां द्वारकपाट तोरण मातीयाक रो व
तहवानादा का पावनशाला सर्व सणहुआ पछे कलीऊ परिचित्रा मरंग स्वर्णदान आरी साकाचस
तवणाऊ परिमुजा करवाइ प्रतिष्ठा कराइ जव सेव दीप कराइ पल्यंग विछाइ सुथरा विछावणा विछा
इ स्त्री सहित सेव जाइ सुख सुं सूतो अरु शाधहुओ घर मांहि बोलीयो पडुं २ इसी शाब्द तीन्या रह्या
वो सेव स्त्री सहित ऊविनाठो वले बीजे दिन पुत्र स्त्री सहित जाइ सूतो अरु शाध हुवो पडुं २ ताहरां

1

सूताफेरिनावा प्रमतीनदिनविचारीसूता अपराद्दहोइतिणसुं अस्त्रान्नदाईजांणिनीदनवमे सगला
हीनेडीवप्यारो तांहरराजानुंहत्तांतकह्यौराजाजांणीयौ इणराघरमेकोईअधिष्ठातादेवताछै सोबो
लेछै अथवाबलमंगेछै विचारराजाकह्यौ सेवइथेघरिछेतोद्रव्यलागेतेतोउंले अ सोसुणि
सुसीहूओ सेवघरमावेसिविचार्यो जीयेघरमांहिप्राणनुंसंदेहऊपजे सोघरकिणकार्यरो
एतोविचारराजानुंदीधो लागतसर्वराजायेवुकाइदीधी संध्याहूइतिवारेराजातेथिसुवणरावि
बावणाकराया असरांनपुण्यकरि राजजीकेमनहूकरता राजाआयसाहरेघरेसूतो अीर्यस
तीआयलेयराकमेसूतोछे घणीरयावेराहूइवो पछुं इ तांहराराजानिर्नयथकोकह्यो वेगोप
डिडीलमकरि परमांचोटालियमि एतोकहतांसोनारोपुरसो साहातीनमणरोपड्यो तीयेऊप
रिफलपमीया ताहरांघररोअधिष्ठाताप्रत्यक्षहोइ प्रसंसाराजारीकरिआपणीवोलगयो अ
तसमेहूओ राजासोनारोआयलेमहिललेजातांसाहेदीठो दिलगीरहूवो जोमेघलेकछेक
रिकरायोपुण्यार्क तीयेकरिपतलोसोनानीनीपनो अलपतलासहितघरिराजारेआयो राजावि
क्रमादित्यउणनुंभेघोकरतोजांणि घरअनेसोनानोपुरिसोदोनुसाहनेवकस्यांराजासाहरोउ

घ्नांजिघरेआया इसमोउदारहोइसोइणेसिंहासणेवेसो इतिश्रीसिंघासणबत्रीसीरीइकतीसमी
कथा ३१ वलेओरमुहूर्त्तेराजाभोजसकलअभिषेककरि सिंहासणिवेसणनुंहूआ तिसेवत्रीस
मीपूतलीवोली अहोराजाइयेसिंहासणेवेसे जीयेरोचित्तविक्रमादित्यसरिखेउदारहोइ भोज
कह्यो किसोकउदारहूतो तदिपूतलीकथाकहेछे उजेणीनगरीविक्रमादित्यराज्यकरेछे तेथिउ
जेणीनेमोएकगामछे तिणमेएकवांणीयोवसे तिणेआपणोवेटोव्यापारवासतेउजेणीमेल्ही
यो सोवणिजकरिनेघोघरेआयो असपितानुंकहीयो आजउजेणीइसमीछे जिकोसर्व
विणजरीतांइलेजाइछे तिकोसर्वविकेछे रहतोराजालेयछे पिणवस्तफिरकाइआवे
नही ताहरांवांणीयोधूर्त्तहूतो ताहरावांणीयेधूर्त्तथकेलोहरोपूतलोवणायो उवेरोनाम
दरिद्रीथापीयो गामीमेघालिउजेणीलेआया आणिराजमार्गमांथापीयो किणहीकेपूछी
यो थारेकिसुवस्तछे अनेकिसुंमोलकहेछे जवेकहीयोओदरिद्रीरोपूतलोछे अनेलाखरूप
ईयामोलछे ताहरांवातसांभलिकोईधनोरहेनही नकोईल्ये संध्याहूई ताहरांराजारेपुरस
पादीठो दलिद्ररोपूतलो किणहीकामरोनही जाइराजानेमालूमकीयो राजाकह्यम्हारो 52

सिंहास न्हारोवचनराषणीज्यौ मीजसकसकरि ताहरासहस्ररूपीयादेदरिद्रआंणिकोवारमेल्हीयो
५२ ताहरांदरिद्रनुंदेषि सप्तांगराज्यलक्ष्मीसमूर्त्तिमयी रमझमाटकरतीजेथिराजापोढीयो
छंतो तेथिआई राजानेप्रत्यक्षहोइ देषिकह्यौ राजायेहेलक्ष्मीइयेवेलाइकंसुपावधारीआ
लक्ष्मीकह्योमहाराजथमेवेरीदरिद्रआणिरिनमारमांहेआंणीयो जिकिमरजं राजाकह्यो-ज्या
द१ रदिनरीवातछे एकघणीपन्योरहलछ्यो जीयेनंलजारस्थीयाजागा तीयेनुंक्युहरिकीजे राजा
लक्ष्मीरीस्तुतिकरेछे इसा होवंतीकअसुपदीये जातीउपदेशाइ गुणछेतेलिषमीतणा वि
णलषमीअगुणाइ १ वेदीरयणायरतणी अनुजजीयेरीचंद जलवंतीमानोकह्यौ कांइकरि
जावेछुंद २ जंपरणीत्रिभुवनधणी आनूषलसंसार जायोमदनकुमारसुतलोउंसवआध
र ३ वात्सी लक्ष्मीबोली राजाकुंजाइस जमारथारेदरिद्रआइपनीयो राजाकविकहे देवी
संसाररीसुषथारेआधीन तीयेकारणिहाथजोडिवीनतीकरुंछुं उमतिजाद असुदरिद्रमेअं
क१ गीकाररापीयो जनरहेतोम्हारोजोरकोइनछे तोजाह एतीसुणिलिषमीगई लक्ष्मीरोरहणन ५२
होइजेथिलक्ष्मीतेथिविवेकहोइ एतोकहिविवेकपणिगयो तवआगेवरतसत्वपणिआ

इकह्यो महाराजजेथिदरिद्रपणिहोइतेथिकुंकुंरुं असुलक्ष्मीविवेकम्हारेसवाइनीकलि
गया म्हारेथांसेतीवडुतप्रीतिछती तीयेकारणिकहणनुंआयोछुं कंपिणजाइस एतोसुणिराजाम
नमांहेविचारयो अहोपुरुषरोजवसत्वगयो तवकासुंरह्योछे इहा लक्ष्मीजाजावपणछेनवही ज
कविवेकसहितगुणसवही जावजाउंननकरजाअवारा पिणसत्वमछोनिसमनहिविचारा १
वार्त्ता राजायेकह्योअरेजाइसत्वओरसवहीजाओ पिणतुंमतजाउ फिरसत्वबोलीयो जेथि
दरिद्रहोइ तेथिकुंक्युरहुं राजाकह्यो जजांम्हासुंमिलतापक्षारेछो मिलीयांघणादिनहुयाछे ग
लवांहमीदेमिलो मिलतांहीराजानुजामांहिपकमराष्योछे असुसुइरह्यो असुकह्योलक्ष्मीजा
ओ पिणसत्वनजावो तिवारेलक्ष्मीविवेकगुणकिंसुंकरे ओसत्वराजाबोमेनही तवलक्ष्मीविवेक
व्यारषमत्ववदलुधनफिर पमी १ रात्रिरहीताहरांसत्वलेसुतोछंतो राजानेथिआया राजाआद
रकरआघालीया एतलीबोली राजाजोजइसमोउदार्यजाइसोइणेसिंहासणेवेसे इतिश्रीसिंघा
सणिबत्रीसीरीवत्रीसमीकथा ३२ इसमोचंद्रकांतिरत्नमयवत्रीसपूतलीयांसहितरीवत्रीसक
थाकरिराजाभोजरीसभामांहि राजाविक्रमादित्यगुणोतकीर्त्तिनकरि सकलआनरणपहि

सिंहासन स्यां दिव्यरूपकरिचित्रीसदेवांगनाप्रत्यक्षहुई अनेकह्यो राजाथारेप्रसादसेतीम्हेसरापसुंछुट्या ता
५३ हरांराजाएवोथेकुणथी असुंथानुं किणरेसरापहुंतो ताहरांदेवांगनाबोली जया १ विजया २ ज
यंती ३ अपराजिता ४ जयघोषा ५ मंजुघोषा ६ लीलावती ७ जयवंती ८ जयसेना ९ मदनसेना १० मदनमं
जरी ११ शृंगारकलिका १२ रतिप्रिया १३ नरमोहिनी १४ भोगनिधि १५ प्रभावती १६ सुप्रभा १७ चंद्रमु
खी १८ अनंगध्वजा १९ कुरंगनयना २० लावण्यवती २१ सौभाग्यमंजरी २२ चंद्रिका २३ हंसग
मना २४ विद्युत्प्रभा २५ आनंदप्रभा २६ चंद्रकांता २७ रूपकांता २८ सुरप्रिया २९ देवानंदा ३०
पद्मावती ३१ पद्मिनी ३२ एहवेनांमेइंद्ररीअंगोलगूहुंत्या एकदिननंदनवनमांहेकोइकमहाऋषी
स्वरकीणदेह बेठोगात्रकीणदेखिम्हांनुंहासीआयो ताहरांरिषीस्वरकोपकरिसरापदीयो कह्योरे तु
म्हेतुम्हारलीथेपाषाणमयथेहारहितहुवो ताहरांम्हेदिव्यशक्तिनिजीवपूतलीहुई तत्कालराजें
इंद्रआपणासिंहासनमांहेराखी यावेयदिसंघासणिसंजुक्तहोइ राजाविक्रमादित्यतुंदीधो तदिदया
करिकह्योजाओयदिमनुष्यलोकें भोजराजारीसभामांहे विक्रमादित्यरोगुणकीर्त्तिनकरिस्यो त
दिवदेहपाइस्वर्गआवस्यो सोराजाउम्हारेप्रसादेम्हांरोसरापमोचनहुओ अवम्हेसंतोषपायो म्हे ५३

५ पासिथेकुंएकवरमांगो ताहरांराजाकह्यो मोनुंमांगणरोसुं सदिशेषकरिस्त्रीपासिमांगुंनही
म्हारेकिणसंप्रयोजननही ताहरांदेवांगनाबोली अहोराजाभोजइयेविक्रमादित्यचरित्र
देवांगनासंवादसुंदरपढसीपढावसी सुणसीसुणसीतीयेरेशुतिकीर्त्तिलक्ष्मीमहिमावृद्धि
ति इसोवरदेदेवांगनास्वर्गगई राजाभोजपिणछंदिसासमुजाततांई राजकरतोहुवो इतिश्रीसिं
घासणबत्रीसीरीबत्रीसेकथासंपूर्णहुई।। संवत १८५३ वर्षेमितीफागणसुद १५ तिथौबुध
वार लि। साध्वीमानाजपुरमध्ये।। श्रीरस्तु।। कल्याणमस्तु।।